अल-क़ाएम अल मुन्तज़र

(अ.त.फ़.श.)

MRP Rs.15/-

शअ़्बानुल मोअ़ज़्ज़म सन १४४३ हि.

ख़ुसूसी शुमारा

हज़रत इमाम महदी अ़लैहिस्सलाम अपनी एक तौक़ीअ़् में तह़्रीर फ़रमाते हैं:

अगर तुम हिदायत चाहोगे, तो हिदायत पाओगे;
अगर तलाश करोगे, तो ह़ासिल करोगे

(कमालुद्दीन, जि.२, बाब ४५, ह.३८)

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम **व सल्लल्लाहो अ़लैका या वलीयल अ़स्र (अ़ज.) अदरिकना**

मुतह्हेरिल अर्ज़

मज़हबे इस्लाम की शान-ओ-तौक़ीर इस क़द्र अ़ज़ीम-ओ-बलन्द है कि इस दीन के अ़लावा ख़ुदा के नज़्दीक कोई दूसरा मज़हब और दीन नहीं है। चुनांचे इर्शादे बारी तआ़ला है:

"यक़ीनन दीन, अल्लाह के नज़्दीक (सिर्फ़) इस्लाम है।"

(सूरह आले इमरान (३), आयत १९)

अमानत

हर अ़ज़ीम-ओ-बुज़ुर्ग ज़ात उस ज़ात का इन्तेख़ाब करती है जो अमानत की ख़ुसूसीयत, अ़ज़मत, बुज़ुर्गी, अहम्मीयत को दर्क करती हो और वोह इस क़ाबिल हो कि उस अमानत को पहुँचाने की भरपूर सलाहियत रखती हो और उसकी हेफ़ाज़त करने की इस क़द्र सलाहियत रखती हो कि उसमें किसी क़िस्म की कमी-ओ-बेशी या आमेज़िश करने वाले इसके दाएरे के क़रीब न आ सके। इसी बयान के तहत इर्शादे बारी तआ़ला फिर हो रहा है:

"यक़ीनन मैं तुम्हारे लिए एक अमानतदार रसूल हूँ। पस तुम अल्लाह से डरो और मेरी एताअ़त करो।"

(सूरह शोअ़रा (२६), आयात १०७-१०८)

मुरसले अअ़्ज़म सल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम की ज़बान से येह जुम्ला किताबे मुबीन में महफ़ूज़ कर दिया ताकि लोग, जिनके लिए येह अमानत भेजी गई है, उसमें तह्रीफ़ न कर सकें। अव्वलुज़्ज़िक्र जब इस्लाम और दीन पर ग़ौर-ओ-फ़िक्र करते हैं, मुत्तफ़क़ा तौर पर तमाम अफ़राद का फ़ैसला है कि यही अमानत है जिसका अह्ल अल्लाह का वोह रसूल सल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम है कि जब मशीयते एलाही का येह तक़ाज़ा हुआ कि ज़मीन पर एक "रह्मतुल लिल आ़लमीन", "ख़ातेमुल अम्बिया वल मुरसलीन" का वुरूद हुआ, उसे इस क़द्र क़ूवत-ओ-सलाहियत

फ़ेहरिस्त

१. मुतह्हेरिल अर्ज़ १
२. मुस्तह्कम पनाहगाह ४
३. मज़लूमियते साहेबुज़्ज़मान अ़लैहिस्सलाम १२
४. मुद्दइयाने नेयाबते इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम १७
५. नुसरते ग़ैबी २२

अता फ़रमाए जो इस अमानत की हिफ़ाज़त की मुतहम्मिल हो सके।

इस बेना पर सादेक़ुल क़ौल हज़रत मोहम्मद सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही व सल्लम की लेसाने मुबारक से येह जुम्ला किताबुल फ़ुरक़ान में मह्फ़ूज़ कर दिया कि मैं रसूले अमीन हूँ जो ख़ुदा की तरफ़ से दुनिया-ओ-मज़हब की अमानत लेकर आया हूँ और इसके इब्लाग़ की तक्मील कर दूँगा और ग़दीरे ख़ुम में येह आयत आ गई:

"आज मैंने तुम्हारे दीन को तुम्हारे लिए कामिल कर दिया और तुम पर अपनी नेअ्मत तमाम कर दी और तुम्हारे लिए दीने इस्लाम को पसन्द किया।"

(सूरह माएदा (५), आयत ३)

अब इसके बअ्द अल्लाह तबारक व तआला जो ख़ल्लाक़े आलम-ओ-ज़माना है, उसने येह कलाम सादिर फ़रमाया:

"यक़ीनन हम ने अपने रसूलों को वाज़ेह और रोशन दलाएल के साथ भेजा और उनके साथ किताब और मीज़ान को नाज़िल किया ताकि लोग इन्साफ़ पर क़ाएम रहें।"

(सूरह हदीद (५७), आयत २५)

साबेक़ा आयत में रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही व सल्लम ने येह भी इर्शाद फ़रमाया था कि अल्लाह से डरो और रसूल के मुतीअ् हो जाओ, यअ्नी ***"सल्लेमू तस्लीमा"*** का एक पूरा दफ़्तर खोल दिया। और एक दरीचा रोशन हो जाता है कि अगर येह दो औसाफ़ यअ्नी ख़ौफ़े ख़ुदा और एताअते रसूल सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही व सल्लम से इन्सान ने अपनी ज़ात में, अपनी रविशे ज़िन्दगी में, अपने चलन में, अपनी हयात में ग़फ़लत बरती तो दुनिया में ख़न्नास और उसके मुलाज़ेमीन जिन-ओ-इन्स इस क़िस्म के वसवास में घेर लेंगे और उसे इस तरह गुमराह कर देंगे, कि वोह अज़ाबे एलाही का मुस्तहक़ हो जाएगा। इसी की तर्जुमानी किताबे ख़ुदा के आख़री सूरह में इस अन्दाज़ से हो रही है, कि अगर बचना चाहते हो तो कहो **"ऐ मेरे रब, ऐ मेरे मालिक, मेरे अल्लाह, मुझे अपनी पनाह में ले ले उस ख़न्नास से जिसके मुलाज़िम, जिन्नात-ओ-इन्सान बेशुमार हैं और बह्काने के लिए वसवास का सरचश्मा हैं।"**

हम यहाँ से क़ारेईन की तवज्जोह अपने अस्ल मज़्मून की तरफ़ मब्ज़ूल करना चाहते हैं। इब्लाग़े रेसालत के दो पह्लू हैं, दो ज़माने हैं! एक जो बेअ्सत से हिजरत तक तमाम होता है और दूसरा जो हिजरत से रेह्लत तक है। बयान के दामन में पूरे तरीक़े से वज़ाहत करने की तमन्ना तो है लेकिन बग़र्ज़े एख़्तेसार इसे तवील नहीं कर सकते।

दीन-ओ-मज़हब की इस मुख़्तसर तम्हीद के बअ्द येह अर्ज़ करना ज़रूरी है कि दीन-ओ-मज़हब एक मुकम्मल मकतबे फ़िक्र है जो इन्सान को "बिलक़िस्त" और उसके मुआशरे को अद्ल-ओ-इन्साफ़ के साथ सुकून आमेज़ ज़िन्दगी बसर करने का तरीक़ा सिखाता है और येह एक एलाही निज़ाम है। लेकिन इसके साथ साथ इर्शादे मुरसले अअ्ज़म सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही व सल्लम हो रहा है कि जितनी सऊबतें और मुसीबतें तमाम अम्बिया और मुरसलीन अलैहिमुस्सलाम ने मिलकर उठाई हैं, मिनजुम्ला वोह तमाम मैंने अपने दोश पर उठा ली। यअ्नी इस मकतबे फ़िक्र के सामने हज़ारों

मक्र-ओ-फ़रेब, साज़िशें, मन्सूबे, ख़न्नास के मुलाज़ेमीन की तरफ़ से भँवर बन कर नया नया रूप लेकर सामने आएँगे, लेकिन वोह शम्अ् क्या बुझे जिसे रोशन ख़ुदा करे।

रसूल सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही व सल्लम ने अपनी हयाते तय्यबा में इब्लाग़े रेसालत का हक़ अदा कर दिया और ख़ुदा की तरफ़ से लाई हुई अमानत को तक्मील तक पहुँचा दिया और एलाही निज़ाम का एक मकतबे फ़िक्र क़ाएम कर दिया जो रफ़्ता रफ़्ता उरूज पर आते हुए आलमगीर शोहरत पा रहा था, लेकिन आप की शहादत से तीन साल क़ब्ल जब मक्का फ़त्ह हुआ, मक्का से मदीना लोगों की आमद-ओ-रफ़्त पहले के मुक़ाबले ज़्यादा होने लगी, मदीने में नजरान के एलाक़े में ईसाई थे और येह मदीना पूरी तरह से इक़्तेसादी-ओ-तह्ज़ीबी लेहाज़ से यहूदियों के हाथ में था। अब कोशिश इस बात की की जाने लगी कि इस इस्लामी तह्ज़ीब को किस तरीक़े से ख़त्म किया जाए और उसकी जगह एक दूसरा मकतबे फ़िक्र किस तरह क़ाएम किया जाए।

चुनांचे धीरे धीरे अन्दर ही अन्दर एक लावा फूटता रहा, पकता रहा और जब आप की रेह्लत हुई, पहली मर्तबा उसका संगे बुनियाद सक़ीफ़ा में रखा गया। और इस तरह से दो मकतबे फ़िक्र ने अपना क़दम दो रास्तों पर उठाया। एक वोह जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही व सल्लम की तजहीज़-ओ-तकफ़ीन में ख़ामोशी के साथ अपनी पूरी तवज्जोह दे रहे थे और दूसरा वोह जो हुकूमत साज़ी का बहुत पहले मन्सूबा बना चुके थे। उन्होंने सबसे पहले वोह इक़्तेसादी तक़वीयत जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही व सल्लम ने अपनी सक़ाफ़त-ओ-तह्ज़ीब के तहत क़ाएम की थी, फ़िदक को जिसका मम्बअ् क़रार दिया था, उस पर क़ब्ज़ा कर लिया था।

इस बेना पर, जो मकतबे फ़िक्र रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही व सल्लम ने क़ाएम किया था, वोह इन्तेहाई ख़ामोशी के साथ मदीना में ज़िन्दगी बसर करने लगा और दूसरे मकतबे फ़िक्र की रफ़्तार बढ़ते बढ़ते यहाँ तक आ पहुँची कि ख़लीफ़ए राशिद के सामने मुआविया ने बग़ावत की तो लोग दोनों को हक़ बजानिब समझने लगे। यअ्नी इज्तेमाए ज़िद्दैन मुहाल होने के बजाए मुम्किन हो गया। और इस तरह से इन दोनों मुख़ालिफ़ गिरोहों में जंग होने लगी जिससे सक़ाफ़त पर गह्रा असर पड़ा और उलूहियत की जो तह्रीक थी वोह पसमान्दा होने लगी और पीछे हटते हटते नौबत यहाँ तक आई कि इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम को करबला में शहीद कर दिया गया। इसके बावजूद चौदह सौ बरस बअ्द आज भी कुछ ऐसे मक़ामत हैं जहाँ पर यज़ीद और मुआविया ज़िन्दाबाद के नअ्रे लग रहे हैं। वक़्त गुज़रा और इन फ़िर्क़ों ने रेसालत के पाकीज़ा अफ़राद जो ***"अनअम्ता"***, ***"ग़ैरिल मग़ज़ूबे"*** और ***"वलज़्ज़ाल्लीन"*** के तर्जुमान थे, उनके सामने नए नए किरदार खड़े कर दिए। रसूल सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही व सल्लम के सामने फ़ज़ीलतों का ढेर लगा कर येह कहा कि "अगर येह मोहम्मद रसूल न होते तो फ़ारूक़ रसूल होते"। और इस तरह से वोह लोग जो इस्लाम के नमूनए हयात थे, उनको धीरे धीरे पसे पर्दा करके नए नए किरदार को ला

..... सफ़हा नं० १६ पर

मुस्तह्कम पनाहगाह

तकवीने आलम से अर्ज़े काएनात तख़्रीबात, फ़सादात, ख़ूँरेज़ी, हलाकत, मरदुम कुशी, सितमगरान और जिन-ओ-इन्स के असरार का ज़ोर और सिलसिला जारी है और बढ़ता जा रहा है और इन हवादिस और ज़ुल्म-ओ-जौर जिनकी हुकूमत साज़ी ज़ेह्नों के अह्ल कारों के ज़रीए इन्सानियत और ख़ुदा परस्तों के ख़ून से ऐसा मह्सूस होता है कि शायद वोह जो ख़ुदा परस्त हैं उनके लिए कोई जाए पनाहगाह नहीं है। सिर्फ़ एक मिसाल मिनज़ुम्ला बिस्यार हादिसात के हज़रत यहया अलैहिस्सलाम के क़त्ल के ज़मीन का इस तरह ख़ूँ उबला कि सालेहीन की दुआ से ज़मीन ने सब्र का घूँट पी लिया।

"सिवाए उन लोगों के जो ईमान लाए हैं और उन्होंने नेक अअ्माल किए हैं कि उन के लिए मग़फ़ेरत है और बहुत बड़ा अज्र भी है।"

(सूरह हूद (११), आयत ११)

तारीख़ तलवार से टपकते हुए ख़ून की दास्तान अह्द ब अह्द रक़म करती रही और इसी के साथ साथ उन ईमान वालों का, सालेहीन का, जो ख़ुदा परस्त थे और अम्बिया-ओ-मुरसलीन अलैहिमुस्सलाम के कारवान का भी इसी शान से करती रही कि वोह हमेशा ज़ोरआवरों के सामने साबित क़दम रहे और अपने रह्बर की मुस्तह्कम पनाहगाह में इत्मीनान की ज़िन्दगी बसर करते रहे जहाँ ज़ालिम का ज़ोर घटा है और इन्सानियत के क़दम मज़बूती से बढ़ते रहे। ज़माना अह्द ब अह्द गुज़रता गया तारीख़ बनती गई जहाँ ज़ुल्म-ओ-इस्तेब्दाद के लिए कितने अस्लहे ईजाद होते, वहीं पनाहगाह के लिए ख़ुदा ने तमाम अस्बाब-ओ-एलल पैदा कर दिए। ख़ुदावन्द मुतआल क़ादिरे मुत्लक़ है, हर शै पर उसकी क़ुदरत ग़ालिब है उसने इस पनाहगाह के लिए इसका ज़िक्र अपने कलाम पाक में नजात दहिन्दा के मुतरादिफ़ क़रार दिया है। ख़ल्लाक़े आलम का नुमाइन्दा ग़ाएब भी है, हाज़िर भी, ज़मीन से आसमान तक उसकी बरकतें अपना दामने अतूफ़त नेकूकारों के लिए फैलाए हुए है। बन्दा ***"अऊज़ो बिल्लाह"*** की तकरार करता है और ख़ुदा उसके लिए कैसे नजात देता है उसकी तफ़सीर क़ारेईन के लिए नेहायत ही एख़्तेसार और एख़्तेसास के साथ पेश करेंगे।

हज़रात अइम्मए मअ्सूमीन अलैहिमुस्सलाम पूरी काएनात में ख़ुदावन्द रहीम-ओ-करीम के नुमाइन्दे हैं और ख़ुदा की सेफ़ाते जमाल-ओ-जलाल के मज़हर हैं। ख़ुदावन्द आलम ने उनको कमालात की बलन्द तरीन मन्ज़िल पर फ़ाएज़ किया है। येह हज़रात जहाँ हादी, रह्नुमा हैं वहीं मुश्केलात में सब की पनाहगाह हैं।

ख़ुदावन्द आलम सूरह हूद में हज़रत हूद, हज़रत सालेह और हज़रत शोऐब अलैहिमुस्सलाम के बारे में फ़रमाता है:

"और जब (उनकी क़ौम की हलाकत के सिलसिले में) हमारा हुक्म आ गया, हम ने अपनी रह्मत से हूद को और उनके साथ ईमान लाने वालों को

नजात दी और हम ने उनको सख़्त-ओ-शदीद अज़ाब से नजात दी।"

(सूरह हूद (११), आयत ५८)

"जब सालेह की क़ौम के लिए हमारा हुक्म आ गया, हम ने अपनी रह्मत से सालेह और उन के साथ ईमान लाने वालों को नजात दी और उस दिन की ज़िल्लत से भी नजात दी। यक़ीनन आप का रब बहुत क़ूवत-ओ-इज़्ज़त वाला है।"

(सूरह हूद (११), आयत ६६)

"जब शोऐब की क़ौम के सिलसिले में हमारा हुक्म आ गया, हम ने अपनी रह्मत से शोऐब को और उनके साथ ईमान लाने वालों को नजात दी।"

(सूरह हूद (११), आयत ९४)

इसके अलावा उमूमी तौर पर इस तरह इर्शाद हुआ:

"आप उन से फ़रमाएँ कौन तुम को ख़ुश्की और तरी की तारीकियों से नजात दिला सकता है।"

(सूरह अन्आम (६), आयत ६३)

"आप फ़रमा दें बस ख़ुदा तुम को उनसे भी नजात दिलाएगा और हर तरह के ग़म-ओ-अन्दोह से नजात दिलाएगा। इसके बअ़्द तुम उसका शरीक क़रार दोगे।"

(सूरह अन्आम (६), आयत ६४)

हज़रत अय्यूब अलैहिस्सलाम के बारे में इर्शाद हुआ:

"याद करें उस वक़्त को जब अय्यूब ने अपने रब से दुआ की थी ख़ुदाया मुझे बीमारियों और दर्द-ओ-ग़म-ओ-तक़लीफ़ों ने घेर लिया है और तू सब से ज़्यादा रहम करने वाला है और फिर हम ने उनकी दुआ क़बूल कर ली और उन से हर तरह के दर्द-ओ-ग़म, अलम-ओ-बीमारी को दूर कर दिया और फिर अपनी रह्मत से उनको उनके अह्ल और दूसरे भी अता फ़रमाए। येह सब हमारी रह्मत की बेना पर है ताकि साहेबाने एबादत हमारे रहम-ओ-करम को याद करते रहें।"

(सूरह अम्बिया (२१), आयात ८३-८४)

"वोह कौन है जो परेशान हाल की फ़रियाद सुने जब वोह उससे दुआ करे और उसकी तकलीफ़ों को उससे दूर कर दे।"

(सूरह नम्ल (२७), आयत ६२)

इस मज़्मून में मुतअद्दिद क़ुरआनी आयतें मौजूद हैं जिनमें ख़ुदावन्द आलम को तमाम तरह की मुश्केलात, परेशानियाँ, बीमारियाँ, रन्ज-ओ-ग़म, अलम-ओ-मुसीबत, दर्द-ओ-तकलीफ़ का दूर करने वाला क़रार दिया गया है। आप इन्हीं चन्द आयतों पर ग़ौर करें जहाँ नजात देने की गुफ़्तुगू है हर जगह एक बात मुश्तरक है। ख़ुदा ने येह नजात अपनी बेपनाह रह्मत की बेना पर अता की है। ख़ुदावन्द आलम की अज़ीम रह्मत हर तरह के रन्ज-ओ-ग़म से नजात का सबब है। ख़ुदावन्द आलम जहाँ ख़ालिक़ है, राज़िक़ है, हादी है..... वहीं हर तरह की तकलीफ़ों से नजात देने वाला भी है।

येह बात भी क़ाबिले तवज्जोह है कि ख़ुदा ने अज़ाब-ओ-सख़्तियों के ज़िक्र के फ़ौरन बअ़्द नजात का ज़िक्र किया है और हज़रत अय्यूब अलैहिस्सलाम के सिलसिले में ***"फ़स्तजब्ना"*** और ***"फ़-कशफ़्ना"*** दोनों जगह ***(फ़)*** से बात की गई। अरबी में ***"फ़"*** फ़ौरियत के लिए इस्तेअ़्माल होता है। यअ़्नी हम ने फ़ौरन उनकी

दुआ क़बूल कर ली और फ़ौरन उनकी तमाम तकलीफ़ों को उन से दूर कर दिया।

ख़ुदावन्द आलम ने येह दुनिया ज़रूर दारे अस्बाब-ओ-अवामिल क़रार दी है मगर ख़ुदावन्द आलम अस्बाब-ओ-अवामिल का पाबन्द नहीं है। वोह बग़ैर किसी सबब-ओ-वसीले के चश्मे ज़दन में बल्कि उससे भी कम वक़्त में तमाम मुश्केलात और तकालीफ़ दूर कर सकता है।

हुज्जते ख़ुदा वास्तए फ़ैज़े ख़ुदा

ख़ुदावन्द आलम की ज़ात में जिस तरह ख़ालेक़ीयत, राज़ेक़ीयत, हयात-ओ-मौत, हिदायत-ओ-तौफ़ीक़..... मुन्हसिर होने के बावजूद उसने दूसरों को भी ख़ालिक़-ओ-राज़िक़.....हादी-ओ-रह्नुमा क़रार दिया है। यअ़नी येह हज़रात ख़ुदा की अता कर्दा ताक़त-ओ-क़ूवत से दूसरों को रिज़्क़ देते हैं, हिदायत-ओ-रह्नुमाई करते हैं इसी तरह ख़ुदा की ज़ात में हर तरह की मुश्केलात-ओ-तकालीफ़ से नजात मुन्हसिर होने के बावजूद उसने अपने औलिया को नजात का सबब और सफ़ीनए नजात क़रार दिया है।

ख़ुदावन्द आलम हज़रत रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही व सल्लम के बारे में फ़रमाता है:

"जब तक आप उनके दरमियान हैं ख़ुदा उन पर अज़ाब नाज़िल नहीं करेगा और जब तक वोह इस्तेग़फ़ार करते रहेंगे ख़ुदा उन पर अज़ाब नाज़िल नहीं करेगा।"

(सूरह अन्फ़ाल (८), आयत ३३)

इस आयत में ख़ुदावन्द आलम ने सबसे पहले रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही व सल्लम के वजूदे मुबारक को अज़ाब से नजात का सबब क़रार दिया है। आज इस वक़्त रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही व सल्लम दुनिया में नहीं हैं मगर उनके जानशीन हुज्जते ख़ुदा इमामे अस्र अलैहिस्सलाम की ज़ाते बाबरकत है जिसकी बेना पर येह उम्मत अपने तमाम गुनाहों के बावजूद ख़ुदा के अज़ीम और दर्दनाक अज़ाब से महफ़ूज़ है। येह भी इमामे ग़ाएब अलैहिस्सलाम के फ़ाएदों में एक फ़ाएदा है। ख़ुदावन्द आलम ने अइम्मा अलैहिस्सलाम को कश्तिए नजात और हर तरह की मुश्केलात से नजात का ज़रीआ क़रार दिया है।

इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम सफ़ीनए नजात

हज़रत रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही व सल्लम की बहुत ही मशहूर-ओ-मअ़रूफ़ हदीस है:

"यक़ीनन हुसैन चिराग़े हिदायत और कश्तिए नजात हैं।"

कश्तिए नजात का मतलब येह है कि जब हर तरफ़ से सैलाब ने घेर लिया हो और इन्सान के पास नजात का कोई ज़रीआ न हो, कोई सहारा नज़र न आ रहा हो उस वक़्त कश्तिए नजात डूबने वाले को नजात अता करती है और लुत्फ़ की बात येह है कि डूबने वाला कश्तिए नजात की तरफ़ नहीं जाता बल्कि कश्तिए नजात उस तक पहुँचती है और उसको डूबने से बचा लेती है।

इमामे ज़माना अलैहिस्सलाम मुस्तह्कम पनाहगाह

इस वक़्त जिन हालात से सारी दुनिया गुज़र रही है उसकी मिसाल माज़ी क़रीब और बईद में नज़र नहीं

आती है। एक नामरई जरसूमा ने जो इस क़द्र कमज़ोर-ओ-नातवाँ है कि एक मर्तबा साबुन से हाथ धोने से उसका असर ख़त्म हो जाता है। गर्म पानी उसके असरात को कम कर देता है। इस क़द्र कमज़ोर-ओ-नातवाँ होने के बावजूद दुनिया के बड़े से बड़े ताक़तवर और तरक़्क़ी याफ़्ता मुमालिक को मुसीबत में इस तरह गिरफ़्तार कर रहा है कि किसी की समझ में कुछ नहीं आ रहा है। इस कमज़ोर-ओ-नातवाँ जरसूमा ने दुनिया का सारा निज़ाम दरहम-ओ-बरहम कर रखा है।

लोग इस आफ़त-ओ-बला से हद दर्जा परेशान हैं। जिस क़द्र इस बला-ओ-मुसीबत की मुद्दत तूलानी होती जा रही है उतना ही लोग रोज़ ब रोज़ ज़्यादा से ज़्यादा हैरान-ओ-परेशान हो रहे हैं। दुनिया का हर आदमी किसी न किसी सूरत में इस बला में गिरफ़्तार ज़रूर है।

ख़ुदावन्द आलम ने अपने जानशीन, ख़लीफ़ा, इमामे वक़्त हज़रत हुज्जत अलैहिस्सलाम को मुस्तह्कम पनाहगार क़रार दिया है। मुख़्तलिफ़ रवायतों में हज़रत इमामे ज़माना अलैहिस्सलाम को इस तरह के अल्क़ाब से याद किया गया है। एख़्तेसार के पेशे नज़र सिर्फ़ चन्द की तरफ़ इशारा करने की सआदत हासिल करते हैं।

ज़ेयारते रोज़े जुमआ

हफ़्ते के सातों दिन किसी न किसी मअ्सूम अलैहिस्सलाम से मख़्सूस है। जुमआ का दिन जो तमाम दिनों का सरदार है वोह हज़रत इमामे ज़माना अलैहिस्सलाम से मख़्सूस है। इस दिन आप अलैहिस्सलाम के ज़हूर के इम्कानात ज़्यादा हैं। जुमआ के दिन हज़रत वलीये अस्र अलैहिस्सलाम की मख़्सूस ज़ेयारत है। इस ज़ेयारत के चन्द जुम्ले इस तरह हैं:

"सलाम हो आप पर ऐ अल्लाह के वोह नूर जिसके ज़रीए हिदायत के ख़्वाहाँ हिदायत हासिल करते है और जिसकी बेना पर मोअ्मिनीन से सख़्तियाँ दूर होती हैं और आसानियाँ नसीब होती हैं।"

"सलाम हो आप पर ऐ कश्तिये नजात।"

ज़ेयारते आले यासीन के बअ्द जो दुआ है उसमें इस तरह है:

"ख़ुदाया तेरा दुरूद-ओ-सलाम "मोहम्मद" (इमामे ज़माना अलैहिस्सलाम हज़रत रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही व सल्लम के हमनाम हैं) पर जो ज़मीन पर तेरी हुज्जत है और तेरी दुनिया में तेरा नुमाइन्दा है....जो तारीकियों को दूर करने वाले है....जो कश्तिये नजात है....जो तारीक दिलों को रोशन करने वाले हैं, जो ज़मीन को अद्ल-ओ-इन्साफ़ से भर देंगे जिस तरह वोह ज़ुल्म-ओ-जौर से भरी होगी।"

हज़रत वलीये अस्र अलैहिस्सलाम उस ख़ुदा की क़रार दी हुई वोह कश्तिये नजात हैं जो हर तरह के दर्द-ओ-तकलीफ़, रन्ज-ओ-अलम से इन्सान को नजात अता करती है। डूबने वाले की ज़िम्मेदारी दिल से फ़रियाद करना है। कश्तिये नजात की ज़िम्मेदारी उसकी नजात है। इस वक़्त हमारी ज़िम्मेदारी दिल की गहराइयों से इस कश्तिये नजात से फ़रियाद करना है, मदद तलब करना है। हम फ़रियाद करके तो देखें सुकून-ओ-इत्मीनान नसीब होता है कि नहीं?

ज़ेयारते जामेआ

ज़ेयारते जामेआ कबीरा नेहायत मोअ्तबर और मुस्तनद ज़ेयारत है। येह ज़ेयारत हज़रत इमाम अली नक़ी अलैहिस्सलाम ने तअ्लीम फ़रमाई है। अक़ीदए इमामत के सिलसिले में येह ज़ेयारत दाएरतुल मआरिफ़ की हैसियत रखती है। इस ज़ेयारत में अइम्मए मअ्सूमीन अलैहिमुस्सलाम के कमालात-ओ-दरजात और दीनी अक़ाएद में उनकी अहम्मीयत और रुक्नियत बयान की गई है। बस यही हज़रात हक़ का मेअ्यार हैं। इस ज़ेयारत को तवज्जोह से पढ़ना और पढ़ते वक़्त मतालिब से आगाही के लिए इमामे वक़्त अलैहिस्सलाम से मदद तलब करने से बसीरत में एज़ाफ़ा होता है। ज़बाने मुबारके मअ्सूम अलैहिमुस्सलाम से निकली हुई बात दिल की गहराइयों में उतर जाती है। इस अज़ीम ज़ेयारत में निज़ामे काएनात के सिलसिले में इमामे वक़्त अलैहिस्सलाम के किरदार को इस तरह बयान किया गया है, मुलाहेज़ा फ़रमाएँ:

"ऐ मेरे आक़ाओं और सरदारों! मैं आप की सना को शुमार नहीं कर सकता। आप की मद्ह की कुन्ह-ओ-हक़ीक़त तक नहीं पहुँच सकता आप के औसाफ़ की वुस्अतों और बलन्दियों को दर्क नहीं कर सकता हूँ।

आप मुन्तख़ब अफ़राद का नूर, नेकूकारों के रह्नुमा, ख़ुदावन्द जब्बार की हुज्जत हैं।

ख़ुदावन्द आलम ने आप ही से इस काएनात की इब्तेदा की है और आप ही पर इसका एख़्तेमाम होगा। आप ही की बेना पर बारिश होती है और आप ही की बदौलत येह आसमान का शामियाना रुका हुआ है और ज़मीन पर नहीं गिरता है। मगर ख़ुदा की इजाज़त से आप की बेना पर हम-ओ-ग़म में सुकून नसीब होता है और आप ही की बेना पर तमाम तकालीफ़ दूर होती हैं।"

फ़ज़ाएल-ओ-कमालात और असरात में तमाम अइम्मए मअ्सूमीन अलैहिमुस्सलाम एक दूसरे के शरीक हैं। सब एक ही नूर से पैदा किए गए हैं। अव्वल-ओ-आख़िर सब एक दूसरे के कमालात में शरीक हैं। अगर किसी ज़ेयारत में कोई एक सिफ़त किसी एक इमाम के लिए बयान की गई है वोह दूसरे इमाम में भी पाई जाती है। हो सकता है कोई ख़ास सिफ़त किसी ख़ास वजह से ज़ेयारते इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम में दूसरे अइम्मए अलैहिमुस्सलाम की बनिस्बत ज़्यादा ज़ाहिर-ओ-आश्कार हो।

सैयदुश्शोहदा हज़रत इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम की ज़ेयारतें जो जनाब मुहद्दिस क़ुम्मी रह्मतुल्लाह अलैह ने ***"मफ़ातीहुल जेनान"*** में नक़्ल फ़रमाई हैं उनमें मोअ्तबर किताब ***"अल-काफ़ी"*** से पहली ज़ेयारत हज़रत इमाम जअ्फ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम से नक़्ल फ़रमाई है। इस ज़ेयारत की सनद को हज़रत आयतुल्लाहुल उज़्मा आक़ाए वहीद ख़ुरासानी दाम ज़िल्लहुल वारिफ़ ने मोअ्तबर क़रार दिया है। इस ज़ेयारत की इब्तेदा में ज़मीरे मुख़ातबे वाहिद *(क)* से इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम की ख़िदमत में अर्ज़े अदब किया गया है। इस के बअ्द वाहिद के बजाए जमअ् *(कुम)* की ज़मीर से अर्ज़े अदब किया गया है। जिससे येह बताया गया है कि कमालात तमाम अइम्मए मअ्सूमीन अलैहिमुस्सलाम में मुश्तरक हैं। इस वक़्त हज़रत हुज्जत इब्निल हसन अल-अस्करी

अलैहेमस्सलाम की ज़ाते बाबरकत उन तमाम सिफ़ात की हामिल है।

दुनिया के मौजूदा तमाम हालात को पूरी तरह नज़र में रखें और देखें कि हज़रत वलीये अम्र अलैहिस्सलाम की ज़ाते अक़्दस की तरफ़ रुजूअ्, उनसे फ़रियाद, उनसे इस्तेग़ासा किस तरह हमारी तमाम मुश्केलात को हल कर सकता है। इस क़द्र मुस्तह्कम पनाहगाह और इस क़द्र रऊफ़-ओ-मेह्रबान इमाम के होने के बावजूद अगर हम परेशानियों की शिकायत करें तो किसका क़ुसूर है? अक्सीर से ज़्यादा तासीर रखने वाली दवा की मौजूदगी में दवा को इस्तेअ्माल न करना और फिर दर्द की शिकायत करना क्या मुनासिब है? इस मुस्तह्कम पनाहगाह में आकर देखें और ख़ुदा की एनायतों को बाक़ाएदा मह्सूस करें। इस ज़ेयारत के कुछ जुम्ले इस तरह हैं:

"आप की बेना पर ज़मीन दरख़्तों को रुश्द-ओ-नुमू अ़ता करती है। आप की बेना पर ज़मीन अपनी आग़ोश में फलों की परवरिश करती है। आप की बेना पर आसमान बारिश के क़त्रों और अपने रिज़्क़ को नाज़िल करता है। आप के ज़रीए ख़ुदा हर तरह की तकलीफ़ को दूर करता है और आप की बदौलत ख़ुदा मूसलाधार बारिश नाज़िल करता है।"

इस वक़्त पूरी काएनात को जो भी मिल रहा है वोह सब का सब बस सिर्फ़ और सिर्फ़ इमामे ज़माना अलैहिस्सलाम की बेना पर उनके ज़रीए मिल रहा है। और येह तमाम फ़ुयूज़-ओ-बरकात इमामे ज़माना अलैहिस्सलाम ख़ुदा की अता कर्दा क़ुदरत-ओ-ताक़त, फ़ज़्ल-ओ-करम से अपने एख़्तेयार से दुनिया को पहुँचा रहे हैं। जो कुछ है वोह इमामे वक़्त अलैहिस्सलाम का फ़ैज़ है।

ख़ुद इमामे ज़माना अलैहिस्सलाम ने एक तौक़ीअ् में इर्शाद फ़रमाया है:

"मैं आख़री वसी हूँ। मेरी बेना पर, मेरे ज़रीए, मेरी बदौलत, मेरे अह्ले ख़ानदान और मेरे शीओं से बलाएँ दूर होती हैं।"

(मिक्यालुल मकारिम, जि.१, स.९१)

जनाब शेख़ मुफ़ीद रह्मतुल्लाह अलैह के नाम एक तौक़ीअ् में इर्शाद-ओ-तह्रीर फ़रमाते हैं:

"हम तुम्हारी देख रेख में कोताही नहीं करते और न ही तुम्हारी याद को भुलाते हैं अगर ऐसा न होता तो हर तरफ़ से सख़्तियाँ और परेशानियाँ तुम को घेर लेतीं और दुश्मन तुम को उखाड़ कर फेंक देते। ख़ुदावन्द आलम का तक़्वा एख़्तेयार करो और इस फ़ित्ना से नजात दिलाने में हमारी मदद करो जो तुम्हें घेरे हुए है। वोह दुनिया से रुख़्सत हो जाएगा जिसकी मौत का वक़्त आ गया है और जिसकी उम्मीद बाक़ी है उसकी हिमायत की जाएगी। येह हमारी हरकत हमारे ज़हूर में तअ्जील की अलामत है और तुम्हारे लिए हमारे अम्र-ओ-नह्य पर साबित क़दम रहने का सबब होगी। और ख़ुदा अपने नूर को तमाम करेगा....गरचे मुश्रिकों को नागवार ही क्यों न गुज़रे।"

(बेहारुल अनवार, जि.५३, स.१७५)

इस तौक़ीअ् शरीफ़ में हज़रत इमामे ज़माना अलैहिस्सलाम ने एक नेहायत अहम बात की तरफ़ इशारा फ़रमाया है:

फ़ित्नों से नजात दिलाने से पहले इमाम अलैहिस्सलाम ने "ख़ुदा का तक़्वा एख़्तेयार करो" फ़रमाया है। तक़्वा यअ्नी गुनाहों से परहेज़ करना। इसका मतलब येह है कि हम इस फ़ित्ना-ओ-फ़साद के दौर में जिस क़द्र गुनाहों से दूर रहेंगे उतना ही इमाम अलैहिस्सलाम हमें फ़ित्नों से नजात दिलाते रहेंगे। और इसका मफ़हूम येह है कि जिस क़द्र गुनाहों से क़रीब रहेंगे, गुनाहें अन्जाम देते रहेंगे उतना ही इमाम अलैहिस्सलाम की एनायतों से महरूम रहेंगे। हमारी गुनाहें मुश्केलात और फ़ित्नों का सबब हैं और हमारी परहेज़गारी उससे नजात की ज़रीआ है और अगर आज हम अपनी तमाम ख़ताओं और गुनाहों के बावजूद बहुत बड़े फ़ित्ना-ओ-आज़्माइश से महफ़ूज़ हैं तो येह सब हज़रत वलीये अम्र अलैहिस्सलाम के रह्म-ओ-करम की बेना पर है।

अस्माए ख़ुदावन्दी कलीदे निज़ामे काएनात

ख़ुदावन्द आलम ने इस निज़ामे दुनिया की कलीद अपने अस्मा क़रार दिये हैं। एक एक इस्म अपनी ख़ास ख़ुसूसियत रखता है। नेहायत एख़्तेसार के पेशे नज़र दुआए सिमात के चन्द इक़्तेबास पेश करने की सआदत हासिल करते हैं।

येह दुआ हज़रत इमामे ज़माना अलैहिस्सलाम के दूसरे नाएब जनाब मोहम्मद बिन उस्मान बिन सईद अम्री रिज़्वानुल्लाह अलैह से नक़्ल हुई है। हज़रत इमाम मोहम्मद बाक़िर और हज़रत इमाम जअ्फ़र सादिक़ अलैहस्सलाम से भी नक़्ल हुई है। रोज़े जुमआ के आख़री औक़ात में इस दुआ के पढ़ने की सिफ़ारिश की गई है और जो हज़रात इस दुआ को मुसलसल पढ़ते हैं उन्होंने इसके असरात मुलाहेज़ा फ़रमाए हैं। आप मुलाहेज़ा फ़रमाएँ अस्माए ख़ुदावन्दी की तासीरात क्या क्या हैं। येह बात ख़ूब अच्छी तरह ज़ेह्न में रहे कि अस्माए एलाही ख़ुदा नहीं है बल्कि ख़ुदा की मख़्लूक़ हैं, ख़ुदा की अलामत हैं।

"ख़ुदाया मैं तुझ से सवाल करता हूँ तेरे इस इस्म "अल अज़ीमिल अअ्ज़मे अअज़्ज़िल अजल्लिल अकरम" के ज़रीए। जब इसके ज़रीए तुझसे दुआ माँगी जाती है कि आसमान के बन्द दरवाज़े रह्मत से खुल जाएँ तो दरवाज़े खुल जाते हैं। और जब इसके ज़रीए येह दुआ माँगी जाती है कि ज़मीन के तंग दरवाज़े कुशादा हो जाएँ तो कुशादा हो जाते हैं। और जब उनके ज़रीए तुझ से येह दुआ माँगी जाती है कि मुश्केलात आसान हो जाएँ तो आसान हो जाती हैं। और जब उन के ज़रीए येह दुआ माँगी जाती है कि मुर्दे ज़िन्दा हो जाएँ तो ज़िन्दा हो जाते हैं। और जब तुझ से येह दुआ माँगी जाती है कि सख़्तियाँ और परेशानियाँ दूर हो जाएँ तो दूर हो जाती हैं...."

इस दुआ में निज़ामे दुनिया को अस्माए ख़ुदावन्दी से मरबूत किया गया है। जब इन अस्मा के ज़रीए मुश्केलात दूर करने के लिए ख़ुदा से दुआ माँगी जाती है तो इन अस्मा की बेना पर ख़ुदा मुश्केलात-ओ-परेशानियों को दूर कर देता है।

ख़ुदावन्द आलम सूरह अअ्राफ़ आयत १८० में इर्शाद फ़रमाता है:

"और अल्लाह के लिए बेह्तरीन, उम्दा नाम है। उनके ज़रीए उसको पुकारो।"

जनाब मुआविया इब्ने अम्मार ने हज़रत इमाम

जअ्फ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम से येह रवायत नक़्ल फ़रमाई है। इस रवायत में इमाम अलैहिस्सलाम ने ख़ुद को अस्माए हुस्ना से तअ्बीर किया है। फ़रमाते हैं:

हज़रत इमाम जअ्फ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम से ख़ुदा के इस क़ौल के बारे में दरियाफ़्त किया गया "अल्लाह के लिए बेहतरीन नाम हैं उनके ज़रीए उसको पुकारो।", इमाम अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया: ख़ुदा की क़सम! हम अल्लाह के बेहतरीन नाम हैं। ख़ुदावन्द आलम किसी भी बन्दे के अमल को क़बूल नहीं करेगा मगर हमारी मअ्रेफ़त की बेना पर।

(अल-काफ़ी, जि.१, स.१४४)

इमामे वक़्त अलैहिस्सलाम की मअ्रेफ़त ख़ुदा का बेहतरीन नाम है जिसके ज़रीए ख़ुदा को पुकारा जाता है।

इस बेना पर इस वक़्त हज़रत वलीये अस्र अलैहिस्सलाम की इमामत-ओ-वेलायत का अक़ीदा, उनकी मअ्रेफ़त, ख़ुदा का वोह नाम है जिसके ज़रीए अअ्माल क़बूल होते हैं और तमाम बलाएँ दूर होती हैं।

लेहाज़ा इस दौरे आफ़त-ओ-बला में हम को हरगिज़ परेशान नहीं होना चाहिए बल्कि उनकी मअ्रेफ़त के साथ उनका वास्ता देकर ख़ुदा से हर तरह के दर्द-ओ-अलम, मुश्केलात-ओ-तकालीफ़, हम-ओ-ग़म से नजात की दुआएँ माँगना चाहिए। जो जिस क़द्र ख़ुलूसे नीयत से दुआ माँगेगा उसी क़द्र जल्द उसकी दुआ क़बूल होगी और नजात मिलेगी।

इमामे ज़माना अलैहिस्सलाम से तवस्सुल करने के लिए दुआए ***"एलाही अज़ोमल बला"*** के अलावा उनकी ***"ज़ेयारते आले यासीन"*** और ख़ास वोह ***"इस्तेग़ासा"*** जो ***"मफ़ातीहुल जेनान"*** में ***"मुनाजाते ख़म्सा अशर"*** से पहले जनाब मुहद्दिसे क़ुम्मी रह्मतुल्लाह अलैह ने नक़्ल फ़रमाया है जिसकी इब्तेदा **"सलामुल्लाहिल कामिलुत्ताम्मो अश्शामेलुल आम्मो...."** से होती है, बहुत मुफ़ीद और मुजर्रब है।

हमारे आक़ा आप देख रहे हैं इस दुनिया के हर गोशे से धुआँ उठ रहा है आग के शोअ्ले बेकसों की तरफ़ लपक रहे हैं। आप के जद की हदीस "दुनिया जब ज़ुल्म-ओ-जौर से भर जाएगी...." ज़हर आलूद आँधियाँ उठ चुकी हैं। हम मुन्तज़ेरीन अब आस लगाए बैठे हैं शायद वक़्ते ज़हूरे हुज्जते ख़ुदा क़रीब आ गया है। आप के जद की मिल्लत को कोई दूसरी तमन्ना नहीं है सिवाए इसके कि हमें तौफ़ीक़ दे दीजिए मौला कि हम वक़्ते ज़हूर आप के हम रकाब हो जाएँ। क़सम है राक़िम के उन आँसुओं की जो आप की बारगाह में हाज़िर कर रहे हैं। आप का चेहरए रोशन हमारी आँखों की ठंडक बन जाए।

ख़ुदा इस दौर में हम सबको ज़्यादा से ज़्यादा अपने इमामे ज़माना हज़रत हुज्जत इब्निल हसन अल-अस्करी अलैहेमस्सलाम की बारगाहे अक़दस में तवस्सुल करने, इस्तेग़ासा करने की सआदत अता फ़रमाए और मुसलसल अता फ़रमाता रहे। आमीन या रब्बल आलमीन।

अल्हम्दो लिल्लाहे अव्वलन व आख़ेरन।

मज़लूमियते साहेबुज़्ज़मान अलैहिस्सलाम

परवरदिगारे आलम ने इस काएनात को जिस ख़ूबसूरती के साथ सजाया, अक्ले इन्सानी हैरान और शशदर है। आँखों को चौंधिया देने वाले मनाज़िर जब दिल पर असर करते हैं तो बशरे ख़ाकी लुत्फ़े परवरदिगार की तरफ़ इस क़द्र मुतवज्जेह होता है कि अपना सर सज्दे में रखकर उसकी हम्द-ओ-सना में मश्गूल हो जाता है।

लेकिन बावजूद इसके कि दिल की गहराइयों से रब्बुल अरबाब का शुक्र अदा करे उसकी बारगाह में सज्दा रेज़ हो फिर भी इन्सान उसके जूद-ओ-करम की इब्तेदा को दर्क करने से क़ासिर रहता है।

एबादतों में बे-एअ्तेनाई और बदनीयती के बावजूद आख़िरकार वजह किया है कि परवरदिगार नेअ्मतों के तसल्सुल में कोई कमी वाक़ेअ् नहीं होने देता जबकि क़ुरआन करीम में येह बयान मिलता है:

"अगर तुम शुक्र अदा करोगे तो हम नेअ्मतों में एज़ाफ़ा करेंगे।"

(सूरह इब्राहीम (१४), आयत ७)

आख़िर कौन सी वोह ज़ात है जो इन नेअ्मतों का शुक्र अदा कर रही है। जिसके सबब येह अर्ज़-ओ-समा नेअ्मते परवरदिगार के मस्कन बने हुए है।

येह अताओं की बरसात एक ही दरवाज़ए रह्मत से है जिसे हम दुआए नुदबा में बेसाख़्ता पुकारते है और कहते हैं:

"कहाँ है वोह अल्लाह का दरवाज़ा कि जिससे अता होती है।"

हमारी ज़ेह्नी और अमली काविशों के तमाम हल कलामे एलाहिया में परवरदिगार ने इस तरह रख दिए हैं कि आयाते एलाही पर ग़ौर-ओ-फ़िक्र कोई मुश्किल बात नहीं रही, और अर्सए क़ल्ब में यक़ीन की रोशनी पैदा कर देता है। इसी क़ुरआने मजीद में इर्शादे परवरदिगार हो रहा है कि तमाम ख़ुश्क-ओ-तर किताबे मुबीन में मज़्कूर है। चुनाँचे इर्शादे एलाही हो रहा है:

"जिसने मौत और ज़िन्दगी को पैदा किया ताकि तुम्हें आज़्माए कि तुम में से अमल में सबसे अच्छा कौन है।"

(सूरह मुल्क (६७), आयत २)

फ़साहते क़ुरआनी या कलामे रब्बानी की शर्ह करते हुए एक आलिमे जलीलुल क़द्र ने लिखा है कि ख़ुदा ने पहले मौत पैदा की फिर ज़िन्दगी। इस आयत के ज़ैल में अस्ल ज़िन्दगी, हयाते दुन्यवी के बअ्द है जो मौत की मन्ज़िल से गुज़र कर अपनी हयाते जावेदानी में वारिद हो जाती है। यहीं से अमले सालेह की भी तअ्क़ीब-ओ-शर्त लगा दी है। चुनाँचे हर मोअ्मिन एक शहीद की मौत मरता है और क़ुरआन ही का एअ्लान होता है कि किसी शहीद को मुर्दा मत समझो, वोह अपने ख़ालिक़ की तरफ़ से रिज़्क़ पा रहा है।

यहाँ ठहर कर हर क़ारेईन को करबला के हादेसात की पूरी तफ़सीर पढ़ने और जानने की दअ्वत दे रहे हैं। इस तनाज़ुर में ख़ुदावन्द मुतआल इर्शाद फ़रमाता है:

"जो लोग ख़ुदा की राह में शहीद किए गए है उन्हें हरिगज़ मुर्दा न समझना बल्कि वोह लोग ज़िन्दा है और अपने परवरदिगार के यहाँ से रिज़्क़ पाते हैं।"

(सूरह आले इमरान (३), आयत १६९)

इस आयत के मफ़हूम को समेटकर अगर हयाते इन्सानी पर आए तो लगता है, हर साँस पर उसकी एनायतों की मोहर लगी हुई है जो उसकी बक़ा की ज़मानत है। और फिर येह यक़ीन हो जाता है कि वोह ज़ात ऐसा ज़रीआ है जिसके वजूद ने इतनी फ़ज़ीलत दी है कि उसके ज़रीए येह तमाम नेअ्मतें अह्ले ज़मीन पर वारिद होती है और मुन्क़सिम भी होती हैं।

येह वही अब्दे कामिल है जो परवरदिगार की बेइन्तेहा नेअ्मतों के तसल्सुल का बाएस है, जो वलीए नेअ्मत है जिनके एख़्तेयार में परवरदिगार ने काएनात का कुल निज़ाम रखा है। वोह अफ़्लाके आलम पर ऐसा सितारा है जिसकी रोशनी से लाखों सितारे ज़िया हासिल कर रहे हैं। वोह वजूद जो कुरए अर्ज़ की बक़ा का ज़ामिन है, वोह हमारे आख़री इमाम अलैहिस्सलाम हैं जो ख़ानदाने इस्मत-ओ-तहारत की नुमाइन्दगी कर रहे हैं। सिलसिलए हिदायत उन्हीं के दम से क़ाएम है। अगर सूरज अपने वक़्त पर निकल रहा है तो वोह उनकी बेना पर, अगर ज़मीन से ख़ेतियाँ उग रही हैं, फ़सलें लहलहा रही हैं, दरख़्त सरसब्ज़-ओ-शादाब हैं, तो उन्हीं की बेना पर.....गोया काएनात का ज़र्रा ज़र्रा परवरदिगार के हुक्म से उनका मुतीअ्-ओ-फ़रमाँबरदार है।

हमारी क़ौम ही वोह क़ौम है जिसके यहाँ वोह बित्तह्क़ीक़ ज़ाते वलीये अम्र, ख़लीफ़ए ख़ुदा और मौसूमे अबा सालेह, हुज्जत इब्निल हसन अल-असकरी अलैहेमस्सलाम हैं। हमारे इमाम अलैहिस्सलाम जिनके कई अल्क़ाब हमारे सामने हैं उनमें एक लक़ब ***"अत्तरीद"*** और ***"अश्शरीद"*** है जिसे इमाम मोहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम ने एक हदीस में इस तरह ज़िक्र किया है :

"इमाम अलैहिस्सलाम से सवाल किया गया कि ज़हूर कब होगा? फ़रमाया! ज़हूर उस फ़र्द के ज़माने में होगा, जो लोगों के ख़ौफ़ से जगह बदलता रहेगा, जिसे लोगों ने भुला दिया होगा। उनके दरमियान होते हुए भी लोग उनसे नावाक़िफ़ होंगे। वोह तन्हा अपने ख़ानदान का यक्ता-ओ-अकेला जिसे अपने वालिद के ख़ून का बदला लेना होगा, जो अपने चचा का हम कुनियत होगा, जो परचमदार होगा, जिसका नाम नबी सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही व सल्लम का नाम होगा।"

(बेहारुल अनवार, जि.५१, स.३७)

लेसाने अइम्मा अलैहिमुस्सलाम से हज़रत इमामे ज़माना अलैहिस्सलाम का येह लक़ब मुकर्रर ज़िक्र हुआ है। इस लक़ब के मअ्ना-ओ-मफ़हूम कुछ इस तरह है कि मख़्लूक़े नाक़द्र शनास ने इन जनाब अलैहिस्सलाम की कोई क़द्र न की, और न ही उनकी मअ्रेफ़त हासिल की, और न उनके वजूद का एह्तेराम किया और न ही उनका हक़्क़े ख़िदमत अदा किया बल्कि अपने ग़ल्बा-ओ-तसल्लुत की वजह से इन जनाब अलैहिस्सलाम के क़त्ल के दरपै हुए।

जिस तरह उनके बुज़ुर्गो को क़त्ल और मसमूम किया, और ज़बान-ओ-क़लम के ज़रीए लोगों के दिलों से उनका ज़िक्र मिटाने में कोशाँ रहे उनके अदमे वजूद और नफ़्ये तवल्लुद पर झूठी दलीलें क़ाएम कीं और

उनकी याद लोगों के क़ुलूब से निकाल दी। इस वास्ते हज़रत अलैहिस्सलाम को ***"अत्तरीद"*** और ***"अश्शरीद"*** कहा गया है।

और ख़ुद हज़रत अलैहिस्सलाम ने इब्राहीम बिन अली से फ़रमाया:

"मेरे वालिद ने मुझे वसीयत की है कि मैं ज़मीन में उस मक़ाम पर क़याम करूँ जो नेहायत मख़्फ़ी और बहुत दूर हो ताकि मेरा हाल किसी पर ज़ाहिर न हो कि अह्ले ज़लाल मेरी अज़ीयत के दरपै हो। और फ़रमाया कि मेरे वालिदे माजिद ने इर्शाद फ़रमाया था कि ऐ फ़र्ज़न्द! तुम पर लाज़िम है कि ज़मीन पर बहुत पोशीदा मक़ाम पर क़याम करना, जो लोगों से बहुत दूर हो क्योंकि हर वलीये ख़ुदा के लिए एक दुश्मन मुआनिद और ज़िद्दे मनाज़ेअ् है...."

(बेहारुल अनवार, जि.५२, स.३२, ह.२८)

उमूमन हर इमाम अलैहिस्सलाम ने अपने ज़माने में तन्हाई को बर्दाश्त किया लेकिन तन्हाई की एक तवील मुद्दत इमामे ज़माना अलैहिस्सलाम की ज़िन्दगी में नज़र आती है। लेकिन इमाम अलैहिस्सलाम को तन्हा छोड़ दिए जाने का मतलब येह नहीं है कि इमाम अलैहिस्सलाम मजबूर हैं, बल्कि मज़लूम हैं। मज़लूमी और मजबूरी में फ़र्क़ है।

इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम करबला में मज़लूम थे, मजबूर नहीं। अमीरुल मोअ्मेनीन अली इब्ने अबी तालिब अलैहेमस्सलाम बअ्दे रेह्लते पैग़म्बर सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही व सल्लम, मज़लूम थे, मजबूर नहीं। मज़लूम वोह होता है जो ख़ुद में ताक़त-ओ-क़ूवत-ओ-सलाहियत रखते हुए भी अपने हालात को इस तरह क़ाबू में रखता है कि उसकी ज़िन्दगी मिसाली बन जाती है। इस बेना पर इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम एक ठोकर मारते तो मैदाने करबला ग़र्क़े आब हो जाता। लेकिन मज़लूमियत थी कि क़ुदरते परवरदिगार का मज़हर होने के बावजूद कोई शिकवा न किया। हत्ता कि नन्ही शहज़ादी हज़रत सकीना सलामुल्लाह अलैहा प्यास की शिद्दत के साथ इस दुनिया से रुख़्सत हुईं लेकिन कभी येह न कहा कि "बाबा बैअत कर लीजिए ताकि पानी मिल जाए।"

मुलाहेज़ा किया आप ने? मज़लूम और मजबूर में फ़र्क़ होता है। लेहाज़ा हमारे इमाम अलैहिस्सलाम मजबूर नहीं हैं। येह तन्हा होना उनके मज़लूम होने की तर्जुमानी कर रहा है। इमाम अलैहिस्सलाम वोह हैं कि जिनके इशारे पर काएनात चल रही है। येह उन्हीं के फ़र्ज़न्द हैं जिनके इशारे पर चाँद दो टुकड़े हो जाता है और सूरज पलट आता है। हाँ लेकिन वोह छोड़ दिए गए हैं तन्हा कर दिए गए हैं, हमारी यादों ने उन्हें छोड़ दिया है, हमारी फ़िक्रों से आप बईद हो गए हैं, जिसमें हमारी बदबख़्ती है। सूरज से आँख चुराई जाए तो इसका मतलब येह नहीं कि वोह हमें अपनी तमाज़त से महरूम कर देगा। हम उन्हें नज़र अन्दाज़ करते भी रहें, तब भी उनके वजूद की हरारत से मुस्तफ़ीज़ होते रहेंगे। बल्कि इमाम अलैहिस्सलाम को तन्हा छोड़ने से नुक़सान हमारा ही है न कि इमाम अलैहिस्सलाम का और येह हमारा उन्हें छोड़ना उनकी मज़लूमी ज़ाहिर करता है न कि मजबूरी। निज़ामे काएनात तो वही चला रहे हैं, हिदायत का आफ़ताब पसे पर्दा अपनी हिदायत की किरनों से काएनात के ज़र्रा ज़र्रा को उसकी ज़रफ़ीयत के मुताबिक़ फ़ैज़ पहुँचा रहा है। इसके बावजूद दिलों का उनकी याद से ख़ाली होना, मजलिसों का उनके ज़िक्र से महरूम रहना, उनकी

मज़लूमियत का इज़्हार है। होना तो येह चाहिए था कि हमारे घरों में ख़ास निशस्त का एह्तेमाम किया जाता जिसमें ज़िक्रे वलीये अम्र अलैहिस्सलाम होता, हमारी मजलिसों और महफ़िलों का आग़ाज़ आप के नामे नामी आप की क़द्र-ओ-मन्ज़ेलत और आपके ज़िक्र की अहम्मीयत से होता। हमारे इश्तेहारात पर आपके नामे बरकत की ख़ातिर कन्दा होते।

आप अलैहिस्सलाम के नाम पर हमारे कारोबार के नाम होते। गोया इस तरह से आप का ज़िक्र हमारी ज़िन्दगी में शामिल होता कि हम जहाँ जाते लोग येह कहते कि येह मुन्तज़िरे इमामे ज़माना अलैहिस्सलाम है और इन्तेज़ार की क़ैफ़ीयत भी तो यही है कि जिसका इन्तेज़ार हो रहा हो ख़ुद के वजूद और आस पास के माहौल को इस तर्ज़ पर बनाया जाए कि लोग देखकर अन्दाज़ा लगा सकें कि आख़िर कौन आने वाला है और किसका इन्तेज़ार है। दुआए नुद्बा की नशिस्तों का ख़ाली होना, मुश्किल तरीन हालात में भी इमाम अलैहिस्सलाम की बारगाह में इस्तेग़ासा का ख़याल न आना, अपने बच्चों को उनकी मोहब्बत पर परवान न चढ़ाना येह तमाम चीज़ें ***"अत्तरीद"*** और ***"अश्शरीद"*** की तर्जुमानी कर रही हैं।

हमें करबला ने येह दर्स दिया है कि अपने इमाम अलैहिस्सलाम के लिए कैसा होना चाहिए। मैदाने कारज़ार में जाने के लिए अस्हाबे इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम का तड़पना, येह गवाही देता है कि मुझे मेरे इमाम अलैहिस्सलाम से किस क़द्र मोहब्बत है। जब एक सहाबी जामे शहादत नोश फ़रमाता तो दूसरे से येह वसीयत करता कि इमाम अलैहिस्सलाम को तन्हा न छोड़ना जब तक मुद्दते हयात बाक़ी हो। इसीलिए जब तमाम के तमाम अस्हाब-ओ-अक़रेबा शहीद हो गए तो इमामे मज़लूम का येह इस्तेग़ासा "हल मिन नासिर..." बता रहा था कि वोह अफ़राद अब नहीं रहे, जिन्होंने अपनी ज़िन्दगी पर हुज्जते ख़ुदा को मुक़द्दम रखा। हमारे इमाम अलैहिस्सलाम आज भी ऐसे चाहने वालों की तलाश में हैं जो इमाम अलैहिस्सलाम को अपनी ख़ाहिशात पर मुक़द्दम रखते हैं। लेहाज़ा फ़र्ज़न्दे हुसैन अलैहिस्सलाम की सदाए "हल मिन नासिर..." रोज़-ओ-शब बलन्द होती है। हमारे कमज़र्फ़ कान उस आवाज़ को सुन नहीं पाते। उनकी निगाहे मोहब्बत से हम महरूम नहीं हैं। लेकिन हमारी आँखों पर उल्फ़ते दुनिया के इतने हिजाबात चढ़ चुके हैं कि हमें वोह दिखाई नहीं देते इसीलिए इमाम अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं:

"वोह उन्हें देखेंगे लेकिन पहचानेंगे नहीं।"

वरना हुज्जते ख़ुदा को देखने के लिए आँखों की बीनाई दरकार नहीं, बल्कि क़ुलूब को उनकी मअ्रेफ़त के नूर से मुनव्वर होना चाहिए। अगर इस तरह न होता तो जनाब अबू बसीर रह्मतुल्लाह अलैह ख़ासाने ख़ास शीअयाने इमाम अलैहिस्सलाम में न होते जो कि आँखों से तो नाबीना थे लेकिन शमए मअ्रेफ़ते लौ इस क़द्र ज़्यादा थी कि कुफ़्र-ओ-ज़लाल के बादलों को चीर कर भी चिराग़े हिदायत से फ़ैज़ हासिल कर रही थी।

ऐ काश कि हम भी उस इमाम अलैहिस्सलाम के क़दमों में अपने सर रखने के क़ाबिल हों, इमाम अलैहिस्सलाम तन्हा हैं, लेकिन अपने चाहने वालों से ग़ाफ़िल नहीं। काश कि हम ***"या लैतनी कुन्तो म-अ़कुम फ़-अ-फ़ू-ज़ फ़ौज़न अ़ज़ीमा"*** को समझ सकें और फ़र्ज़न्दे इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम के लिए ***"बे-अबी अन्त व उम्मी व नफ़्सी व अह्ली व माली"*** की मन्ज़िल

पर पहुँच सकें।

ऐ मेरे आक़ा, मेरे इमाम, ऐ वारिसे अम्बिया-ओ-मुरसलीन अलैहिमुस्सलाम आप की बारगाह में दस्ते तलब दराज़ है, कि मौला! इस दुनिया की ज़िन्दगी में मुझे ऐसे अअ्माले सालेह की तौफ़ीक़ अता फ़रमाइए कि हमारी क़ौम का हर बच्चा उठते बैठते ***"या अबा सालेह, हुज्जत इब्निल हसन अल अस्करी अज्जिल अला ज़हूरेक"*** पुकारे। मौला! आप को तन्हाइए इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम का वास्ता है बवक़्ते रुख़्सत हमारी क़ौम के हर एक फ़र्द को येह तौफ़ीक़ हो कि उसका दिल हुमक हुमक कर सदाए ***"लब्बैक या मुन्तक़िमे ख़ूने हुसैन अलैहिस्सलाम"*** दे।

परवरदिगार से दुआ है कि हमें रोज़े क़यामत हज़रत ज़हरा सलामुल्लाह अलैहा के सामने शर्मिन्दा न होने दे और फ़र्ज़न्दे ज़हरा सलामुल्लाह अलैहा की ख़िदमत में सुब्ह-ओ-शाम मसरूफ़ रहने की तौफ़ीक़ एनायत फ़रमाए।

एलाही आमीन

सफ़हा न॰ ३ का बाक़ी .....

लाकर उनके मुक़ाबिल में खड़ा कर दिया। और नौबत यहाँ तक आई कि हर इमाम अलैहिस्सलाम को शहीद कर दिया गया।

येह एक साबित शुदा हक़ीक़त है कि उलूही तह्रीक को कोई शिकस्त नहीं दे सकता और उसकी हिफ़ाज़त के लिए रसूल सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही व सल्लम की येह हदीस जो शोहरा आफ़ाक़ है और क़यामत तक गूँजती रहेगी कि **"मेरे बअ्द मेरे बारह ख़लीफ़ा होंगे और बारहवाँ वोह होगा जो इस ज़मीन को अद्ल-ओ-इन्साफ़ से इस तरह भर देगा जिस तरह वोह ज़ुल्म-ओ-जौर से भरी होगी"**।

हर इन्सान जो थोड़ी बहुत भी सोचने-ओ-समझने की सलाहियतें रखता है वोह देख रहा है कि ज़मीन का कलेजा फट रहा है और हवाओं में ऐसे ज़हरीले अनासिर की कसरत हो रही है जो ज़मीन की हरारत-ओ-सुकून-ओ-ज़रख़ेज़ी-ओ-सुल्ह-ओ-अम्न परस्ती सब में गोया आग सी लग गई है। कहीं बमों के धमाके हैं, कहीं जौहरी अनासिर बादल बनकर छा रहे हैं। ऐसा लगता है बस अब ज़मीन की नब्ज़ रुकेगी और येह मुर्दा हो जाएगी।

लेकिन शायद अभी पैमानए हयात अर्ज़े ख़ाकी की नजासतों से छल्का नहीं है। इमामे ज़माना अलैहिस्सलाम जिन्हें ***"मुतह्हेरिल अर्ज़"*** और ***"नाशेरुल अद्ल फ़ित्तूले वल अरज़"*** से मुलक़्क़ब किया गया है, यअ्नी ज़मीन को पाक करने वाले और ज़मीन के तूल-ओ-अरज़ में अद्ल को फैलाने वाले की पर्दए ग़ैब से सदा आ रही है कि घबराना नहीं, ऐ मेरे जद पर सुब्ह-ओ-शाम सोगवार रहने वालों ज़ुल्फ़ेक़ार मेरे क़ब्ज़े में है, ख़ुदा ने हमें ***"ग़ैरिल मग़ज़ूब"*** और ***"अन्अम्ता"*** का तर्जुमान क़रार दिया है। हम इस अर्ज़े ख़ाकी की नब्ज़ जब डूबने लगेगी, उसे फिर उभार देंगे और उसे हयाते नौ बख़्शेंगे। यही वअ्दए एलाही है।

मुद्दइयाने नेयाबते इमामे ज़माना अलैहिस्सलाम

शीआ मुआशरे की तश्कील और उस मुआशरे के माहौल में हर मुआशेरती माहौल की तरह ज़मान-ओ-मकान में कुछ उतार चढ़ाव वजूद रखते हैं। बावजूद इन अवामिल के इस शीई मुआशरे की यक्सानीयत, मरकज़ीयत और यक्सूईयत न सिर्फ़ क़ाएम रही बल्कि निखरती रही..... रह्बरी की हवस, हुकूमत का उन्सुर लिए हुए, माल-ओ-ज़र को अपनाने और तअय्युश की ज़िन्दगी बसर करने के लिए इस शीई माहौल को, जो नेहायत ही मुश्केलात के दौर से गुज़रते हुए तमाम चाल-ओ-साज़िशों, सियासतों, मक्रूहात को तोड़ते हुए उभर रहा था। इन अफ़राद में जो रह्बरी का उन्सुर नज़र आया उसमें दो हिस्से थे। एक तरदीद का और दूसरा तौशीक़ का, इन दो हिस्सों के दरमियान जो मज़कूरा बयान है उस पर तरदीद कैसे छाई रही इसके तमाम अस्बाब-ओ-एलल, जो कि हमारे हक़ीक़ी रह्बर हैं, उलमा के ज़रीए जो इस मुआशरे में अपनी ज़िम्मेदारी निभा रहे थे, उन अवामिल ने कैसे उसे साफ़ किया, निखारा और उसके आईने में हक़ीक़त को हमेशा रोशन रखा। इसलिए कि येह क़ौम वोह क़ौम है जो हक़ीक़त के प्लेटफार्म पर ही अपनी ज़िन्दगी को बसर करती रही और बढ़ती चली गई। तमाम सैलाबों, मुसीबतों को तूफ़ानों, मसमूस हवाओं को काटती हुई अपनी राह को हमेशा क़ाएम रखा। अब हम आपको तरदीद के मुतअल्लिक़ बताएँगे कैसे तूफ़ान आए और उसमें कैसे कैसे लोग रह्बरी का झूठा दअ्वा करके अपने मक़ासिद को हल करते रहे।

बक़ौले अल्लामा इक़बाल:

येह माल-ओ-दौलते दुनिया, येह रिश्ता-ओ-पैवन्द
बुताने वह्म-ओ-गुमाँ ला एलाहा इल्लल्लाह

इस *ला एलाहा इल्लल्लाह* के क़याम-ओ-क़ौल को अक़ीदत की गहराइयों में दाएमी तौर पर बसाने के लिए अइम्मए मअ्सूमीन अलैहिमुस्सलाम ने क़ुर्बानियाँ दी हैं और शीअत को बचाया है। तरदीद के तअल्लुक़ से हम इस वक़्त अमीरुल मोअ्मेनीन अलैहिस्सलाम की मज़लूमियत से लेकर इमाम हसन अस्करी अलैहिस्सलाम की शहादत तक पूरी वज़ाहत का हौसला तो रखते हैं लेकिन मज़्मून की वुस्अत के पाबन्द हैं कि उसका हक़ अदा नहीं हो सकता। लेहाज़ा आख़री इमाम अलैहिस्सलाम के ज़माने में जो हालात पैदा हुए हैं और जिन अफ़राद ने इसे मस्मूम करने की, इस पर पर्दा डालने की कोशिश की, अपने आप को उभारने के लिए, हम चन्द ऐसे मफ़ाद परस्त लोगों का ज़िक्र करेंगे जिन्होंने अपने मक़्सद को हासिल करने के लिए रह्बरियत को बरूएकार रखा।

हमारे आख़री रह्बर वोह हैं जिनकी दो ग़ैबतें हैं। एक ग़ैबते सुग़रा दूसरी ग़ैबते कुबरा। ग़ैबते सुग़रा में ही कैसी कैसी घिनावनी साज़िशें अमल में आईं हैं कि इमामे ज़माना अलैहिस्सलाम के वजूदे अक़्दस को सामने रखते हुए उनकी नेयाबत का झूठा दअ्वा करने वाले मक्रूह चेहरे सामने आते रहे, जो ख़ुद को नाएब बता कर पूरी क़ौम को गुमराह करते रहे। जिनके चेहरे से नक़ाब हमारे इमाम अलैहिस्सलाम, उलमा, साहेबाने क़लम, दानिशवरों, मोहक़्क़ेक़ीन ने किस तरह उतारी है।

हम क़ारेईन केराम की तवज्जोह चन्द ऐसे झूठे दअ्वेदाराने नेयाबते इमामे ज़माना अलैहिस्सलाम की तरफ़

मब्ज़ूल करना चाहते हैं, जिन्होंने शह्वाते इन्सानी की पैरवी करते हुए हमेशा हमेशा के लिए जहन्नम ख़रीद ली।

इस मज़्मून के ज़रीए हमारा मक़्सद तीन चीज़ें साबित करना हैं:

अव्वल: येह मुद्दइयाने नेयाबत ख़ुद हज़रत इमाम महदी अलैहिस्सलाम के वजूद की बहुत बड़ी दलील हैं, क्योंकि इन दअ्वेदारों ने अपने दअ्वे में हज़रत इमाम महदी अलैहिस्सलाम से राबते का इज़्हार किया था।

दुवुम: येह दअ्वेदाराने नेयाबते हज़रत इमाम महदी अलैहिस्सलाम, अपने झूठे दअ्वा के कुछ पहले से एक अअ्ला मक़ाम रखते थे। हिदायत के बअ्द इस तरह की गुमराही हमें मुतनब्बेह कर रही है कि हमें क़ुरआन करीम की इस आयत की तिलावत मुसलसल करनी चाहिए:

"ऐ हमारे पालने वाले! हमारे दिलों को हिदायत करने के बअ्द डाँवा डोल न कर और अपनी बारगाह से हमें रह्मत अता फ़रमा बेशक तू बड़ा देने वाला है।"

(सूरह आले इमरान (३), आयत ८)

और बक़ौल सिफ़ारिशे हज़रत इमाम जअ्फ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम दुआए ग़रीक़ की भी पाबन्दी से तिलावत करनी चाहिए:

"या अल्लाहो या रह्मानो या रहीमो या मुक़ल्लेबल क़ुलूबे सब्बित क़ल्बी अ़ला दीनेक"

(मिक्यालुल मकारिम, जि.२, स.२६०,६०७)

सिवुम: ग़ैबते कुबरा में हम सब की ज़िम्मेदारी है कि ऐसे गिरोह से आग़ाह रहें और ख़ुद इमामे ज़माना अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया है उन लोगों से दूरी एख़्तेयार करें और उनकी तरदीद की हर मुम्किन कोशिश करें।

इमामे ज़माना अलैहिस्सलाम के हक़ीक़ी नाएबीन जो कि नव्वाबे अरबआ के नाम से मशहूर हैं, इस क़द्र मख़्फ़ी ज़िन्दगी बसर करते कि ज़ाहिरन रोग़न फ़रोशी करते, लेकिन अक़ीदे की रस्सी को मज़बूती से थामे रखते। इमाम अलैहिस्सलाम और अवाम के दरमियान राब्ता को क़ाएम रखने के लिए भरपूर एक़दाम करते। वोह सिक़ा हज़रात जो उस मुआशरे में इस अक़ीदे पर थे और दाम-ओ-दिरहम-ओ-क़लम और अपने पाकीज़ा नफ़्स और एबादत की बेना पर हज़रत से क़ुर्ब हासिल करते रहे।

हज़रत अमीरुल मोअ्मेनीन अली इब्ने अबी तालिब अलैहेमस्सलाम ने फ़रमाया:

"इमाम चाहे ज़ाहिर हो या ग़ाएब हिदायत का काम बतरीक़े अह्सन अन्जाम देता है।"

(नह्जुल बलाग़ा)

हज़रत इमामे ज़माना अलैहेमस्सलाम ने फ़रमाया:

"अगर हिदायत चाहोगे, हिदायत पाओगे।"

ईमान-ओ-तस्लीम की एक मिसाल को मुलाहेज़ा करें कि हुसैन बिन रौह रह्मतुल्लाह अलैह के वक़्ते नज़्अ अह्मद बिन मत्तील सिरहाने बैठे हुए थे और अली बिन मोहम्मद सैमुरी रह्मतुल्लाह अलैह पाँएती क्योंकि इन सिक़ा हज़रात में अह्मद बिन मत्तील बहुत ज़्यादा मुत्तक़ी और हज़रत हुज्जत इब्निल हसन अल-अस्करी अलैहेमस्सलाम से बहुत ज़्यादा क़रीब जाने जाते थे। लेकिन जब तौक़ीअ् मुबारक वुसूल हुई जिसमें नेयाबत अली इब्ने मोहम्मद सैमुरी रह्मतुल्लाह अलैह की ख़बर थी, अह्मद बिन मत्तील की शख़्सीयत की बलन्दी और अख़्लाक़ की अअ्ला क़द्री थी कि सिरहाने से उठे, अली इब्ने मोहम्मद सैमुरी रह्मतुल्लाह अलैह को सिरहाने बैठाया और ख़ुद उनकी जगह पाएँती बैठ गए। येह शख़्सीयत हसद, हिर्स और आज़की गर्द से किस क़द्र पाक-ओ-साफ़ थी। परवरदिगार! हमारी क़ौम में अब भी अगर इस क़िस्म के

उन्सुर पाएँ जाते हों, ऐसी कमज़ोरियाँ पाई जाती हों, नाएबीन-ओ-रुवात में येह गर्द आलूद नज़रियात छिपे हों तो उन्हें साहेबे अम्र अलैहिस्सलाम के सदक़े में दुरुस्त फ़रमा ताकि हमारा शीई क़ाफ़िला इमामे ज़माना अलैहिस्सलाम की रह्बरी में आगे बढ़ता रहे।

शेख़ तूसी रह्मतुल्लाह अलैह और दीग़र उलमाए क़ेराम में पहले नाएबे ख़ास हज़रत उस्मान बिन सईद अम्री रह्मतुल्लाह अलैह के ज़मानए वकालत में उन दअ्वेदारों की ग़ैर मौजूदगी के मुन्दर्जा ज़ैल अस्बाब बयान किए हैं:

अव्वल: उस वक़्त के सियासी हालात इस क़द्र ख़तरनाक थे कि जैसे ही बादशाहे वक़्त को किसी के वकील होने की ख़बर मिलती उसके क़त्ल का फ़रमान जारी हो जाता। इस ख़ौफ़ से किसी ने झूठा दअ्वा करने की जुरअत नहीं की।

दुवुम: जनाब उस्मान बिन सईद अम्री रह्मतुल्लाह अलैह की शख़्सीयत इस क़द्र मोअ्तबर और बेमिसाल थी कि शीओं के दरमियान उनके मद्दे मुक़ाबिल आने वाला सिवाए रुस्वाई के और किसी अन्जाम से हम किनार न होता, क्योंकि आप हज़रत इमाम मोहम्मद तक़ी, इमाम अली नक़ी और इमाम हसन अस्करी अलैहिमुस्सलाम के भी नाएब थे।

सिवुम: लोगों को उस वक़्त नाएबीन के ज़रीए इमामे वक़्त से राबेते की आदत नहीं थी। पहले नाएब के जमाने के बअ्द येह सिलसिला शुरूअ् हुआ।

(तारीख़े ग़ैबते सुग़रा, शेख़ तूसी अलैहिर्रह्मा, स.४६४)

उलमाए केराम ने ग़ैबते सुग़रा में दूसरे नाएब के दौर से जिन झूठे दअ्वेदाराने नेयाबते इमामे ज़माना अलैहिस्सलाम का तज़्केरा किया है उन में से चन्द का हम ज़ैल में तज़्केरा करेंगे। इस सिलसिले में मज़ीद मअ्लूमात के ख़ाहिशमन्द हज़रात किताब ***"बेहारुल अनवार"*** और तर्जुमा बेहारुल अनवार बनामे ***"महदी मौऊद"***, अली दवानी, सबक़ २२, स.६९७-७१८, रुजूअ् करें।

१) अबू मोहम्मद हसन शरीई

इन झूठे दअ्वेदारानों में सरे फ़ेहरिस्त है अबू मोहम्मद हसन शरीई का नाम, शैख़ुत्ताएफ़ा मोहम्मद बिन हसन तूसी अलैहिर्रह्मा ने अपनी किताब ***"अल ग़ैबा"*** में नक़्ल किया है, जिसे आम तौर पर शरीई के नाम से याद किया और पहचाना जाता है। उलमा की एक जमाअत मिस्ले अबू मोहम्मद तलअकबरी और अली मोहम्मब बिन हम्माम ने इसे अस्हाबे इमाम अली नक़ी अलैहिस्सलाम और हज़रत इमाम हसन अस्करी अलैहिस्सलाम के चाहने वालों में शुमार किया है। अबू मोहम्मद तलअकबरी फ़रमाते हैं कि हसन शरीई का कुफ़्र-ओ-इल्हाद का अक़ीदा आशकार होने के बअ्द तमाम झूठे दअ्वेदारों ने सब से पहले इमाम अलैहिस्सलाम के मुतअल्लिक़ झूठ बाँधा और कहा कि हम उनके वकील हैं।

और इस तरह कुछ ज़ईफ़ुल ईमान हजरात को अपने चंगुल में फँसा भी लिया। और इसके फ़ासिद अक़ाएद कुफ़्र-ओ-इल्हाद मसलन ***"वहदतुल वजूद"*** जो कि मन्सूर हल्लाज और शल्मग़ानी के अक़ीदे पर थे, सामने आ गए और हज़रत इमामे ज़माना अलैहिस्सलाम की तौक़ीअ् में मलऊन क़रार पाए।

(महदी मौऊद, स.६९७-६९८)

२) मोहम्मद बिन नसीर नुमैरी

इब्ने नूह फ़रमाते हैं कि अबू नस्र हेबतुल्लाह बिन मोहम्मद ने मुझे बताया कि मोहम्मद बिन नसीर नुमैरी हज़रत इमाम हसन अस्करी अलैहिस्सलाम के अस्हाब में से था। जैसे ही जनाब उस्मान बिन सईद अम्री रह्मतुल्लाह अलैह का इन्तेक़ाल हुआ उसने दअ्वा किया "नाएबे इमामे ज़माना अलैहिस्सलाम मैं हूँ।" अबू तालिब फ़रमाते हैं

कि जैसे ही मोहम्मब बिन नसीर नुमैरी के फ़ासिद अक़ाएद की ख़बर मोहम्मद बिन उस्मान बिन सईद अम्री रह्मतुल्लाह अलैह को मिली, आप ने उस पर लअ्नत की और दूरी एख़्तेयार की। यहाँ तक कि नुमैरी ने मिलने की ख़ाहिश ज़ाहिर की लेकिन मोहम्मद बिन उस्मान रह्मतुल्लाह अलैह ने अपने आप को उनसे छिपा कर रखा। सअ्द बिन अब्दुल्लाह अशअरी फ़रमाते हैं कि नुमैरी अक़ीदए "तनासुख़" का क़ाएल था। हज़रत इमाम अली नक़ी अलैहिस्सलाम को नऊज़ो बिल्लाह ख़ुदा जानता था और अपने आप को उनका भेजा हुआ नबी कहता था। महरम औरतों से नज़्दीकी को जाएज़ जानता था और अमले लवात, हम जिन्सी को हलाल क़रार देता था। मोहम्मद बिन मूसा बिन हसन बिन फ़ुरात वज़ीरे अल मुक़्तदिर बिल्लाह अब्बासी कहते हैं कि नुमैरी का कहना था कि ख़ुदा ने अपने किसी बन्दे पर इन चीज़ों को हराम नहीं क़रार दिया है। सअ्द बिन अब्दुल्लाह फ़रमाते हैं कि वक़्ते वफ़ात उसने अपने जानशीन का नाम अह्मद बताया और लोग तीन हिस्सों में तक़्सीम हो गए।

(महदी मौऊद, स.६९८-६९९)

क़ारेईन मुलाहेज़ा फ़रमाया आप ने अगर ख़ुदावन्द आलम हमें अपने हाल पर छोड़ दे तो हम न जाने गुमराही और ज़लालत की किस खाई में जा गिरें। इस इदारे के बानी हुज्जतुल इस्लाम वल मुस्लेमीन अल हाज जनाब आक़ाए शेख़ मोहम्मद इस्माईल रजबी अलैहिर्रह्मा (ख़ुदा उनके दर्जात बलन्द करे) हमेशा कहा करते थे आदमी जिस क़द्र ऊँचाई पर जाता है उस क़द्र मज़बूत सहारे की ज़रूरत ज़्यादा होती है क्योंकि ऊपर से गिरने का ख़तरा ज़्यादा होता है और ज़्यादा चोट भी लगती है।

३) अह्मद बिन हेलाल करख़ी

अबू अली बिन हम्माम फ़रमाते हैं कि अह्मद बिन हेलाल अस्हाबे इमाम हसन अस्करी अलैहिस्सलाम में से थे। ज़मानए हज़रत इमाम हसन अस्करी अलैहिस्सलाम तक तमाम शीओं का येह मानना था कि उस्मान बिन सईद रह्मतुल्लाह अलैह के बअ्द मोहम्मद बिन उस्मान रह्मतुल्लाह अलैह हज़रत इमामे ज़माना अलैहिस्सलाम के नाएब होंगे। लेकिन उनकी रेह्लत के बअ्द अह्मद बिन हेलाल ने उस्मान बिन सईद रह्मतुल्लाह अलैह के बअ्द नाएब होने का दअ्वा कर दिया और कहा कि मैंने मोहम्मद बिन उस्मान रह्मतुल्लाह अलैह की नियाबत के बारे में इमाम हसन अस्करी अलैहिस्सलाम से कुछ नहीं सुना। लोगों ने कहा कि "और इतने लोगों ने तो सुना है, जो कि सब क़ाबिले इत्मीनान हैं।" कहा "नहीं! जिसने सुना है वोह माने, मैं नहीं मानता।" जनाब हुसैन बिन रौह नोबख़्ती रह्मतुल्लाह अलैह के ज़रीए हज़रत इमामे ज़माना अलैहिस्सलाम की तौक़ीअ सादिर हुई। हज़रत इमामे ज़माना अलैहिस्सलाम ने उन पर लअ्नत की और लोगों को उनसे दूर रहने की हिदायत की।

(महदी मौऊद, स.६९९)

४) अबू ताहिर मोहम्मद बिन अली बिन बिलाल

येह भी मुद्दइयाने नेयाबते इमामे ज़माना अलैहिस्सलाम में शामिल हैं। नेयाबत का दअ्वा करके इमाम अलैहिस्सलाम के एक चाहने वाले से अमवाले शरई वसूल किए और दअ्वा किया कि हज़रत इमामे ज़माना अलैहिस्सलाम ने मुझे लेने के लिए कहा था। अबुल हसन मोहम्मद बिन मोहम्मद बिन यह्या मआज़ी जो अबू ग़ालिब ज़रारी के नाम से मशहूर थे, उन्होंने उनकी दास्तान को तफ़सील से नक़्ल किया है और साबित किया है कि हज़रत इमामे ज़माना अलैहिस्सलाम के फ़रमान के बावजूद उसने उन अमवाल को जनाब

मोहम्मद बिन उस्मान रह्मतुल्लाह अलैह के हवाले नहीं किया।

(महदी मौऊद, स.६९९-७०१)

५) हुसैन बिन मन्सूर हल्लाज

शेख़ तूसी अलैहिर्रह्मा ने नक़्ल किया है कि अल्लाह ने जब हुसैन बिन मन्सूर हल्लाज को रुस्वा करना चाहा तो उसके फ़ासिद अक़ाएद को आश्कार कर दिया। उसने मोह्तरम-ओ-मुक़द्दस शख़्सीयत ख़ानदाने नोबख़्त जनाब अबू सह्ल को एक ख़त लिखा जो बग़दाद की जानी पहचानी और मअ्रूफ़ शख़्सीयत थी। जिसका मज़्मून कुछ इस तरह था "मैं नाएबे इमामे ज़माना अलैहिस्सलाम हूँ, येह न सोचना कि मैं तुम से कोई हाजत या ग़रज रखता हूँ। मुझे तुम से कुछ नहीं चाहिए मैंने तो सिर्फ़ तुम्हें मुत्तलअ् करने के लिए येह ख़त लिखा है और सुनो! मेरी तरदीद न करना।" अबू सह्ल को जब येह ख़त मिला तो आप ने मेज़ाहिया जवाब दिया कि मैं आप को रद्द नहीं करूँगा। लेकिन आप मोअ्जिज़े से मेरे एक मसअले को हल कर दीजिए, वोह येह कि मेरी दाढ़ी और सर के बाल सफ़ेद हो चुके हैं। बारहा उन में हेना (ख़ेज़ाब) लगाना पड़ता है। क्योंकि मेरी बहुत सारी कनीज़ें हैं उनकी ज़रूरीयात को पूरा करने के लिए दाढ़ी और सर के बाल की सफ़ेदी छिपाना बहुत वक़्त लेता है आप इसे मुस्तक़िल काला कर दीजिए जैसे ही येह जवाब मिला, हल्लाज समझ गया कि उन्होंने मेरे दअ्वे का मज़ाक़ उड़ाया है।

उलमा के एक गिरोह ने शेख़ सदूक़ अलैहिर्रह्मा के भाई से नक़्ल किया है कि हल्लाज का बेटा एक ख़त लेकर क़ुम आया, जैसे ही येह ख़त मेरे वालिद के सिपुर्द किया, आप ने उसे लाने वाले के सामने ही फाड़ दिया.....और फिर आपने कारिन्दों से कहकर अपने घर से बाहर निकलवा दिया।

(महदी मौऊद, स.७०१-७०४)

६) मोहम्मद बिन अली शल्मग़ानी

झूठे दअ्वेदाराने नेयाबते इमामे ज़माना अलैहिस्सलाम में एक बहुत ही मअ्रूफ़ नाम मोहम्मद बिन अली शल्मग़ानी है जिसे "इब्ने अबी अल अज़ाक़िर" भी कहा जाता है। इसकी दास्तान को तफ़सील से इब्ने असीर जज़री ने अपनी किताब "अल-कामिल फ़ीत्तारीख़" की जिल्द ६ में नक़्ल की है:

शेख़ तूसी अलैहिर्रह्मा फ़रमाते हैं कि उम्मे कुलसूम जो मोहम्मद बिन उस्मान रह्मतुल्लाह अलैह की बेटी और बुज़ुर्ग ख़ातून थीं, वोह फ़रमातीं हैं कि शल्मग़ानी बनी बस्ताम के नज़्दीक बहुत मोह्तरम-ओ-मुकर्रम थे क्योंकि हुसैन इब्ने रौह रह्मतुल्लाह अलैह उनको लोगों के सामने बड़ी इज़्ज़त देते थे। इससे शल्मग़ानी ने फ़ायदा उठाया और हुसैन इब्ने रौह रह्मतुल्लाह अलैह की बुराई और तोह्मत बनी बस्ताम में येह कह कर की कि उनके तमाम उयूब को उसने मुझे छिपाने के लिए कहा था। यही वजह है कि मुझे इतनी इज़्ज़त देता है। क़बीले वालों ने यक़ीन भी कर लिया। जब येह ख़बर हुसैन बिन रौह रह्मतुल्लाह अलैह तक पहुँची तो आप ने न सिर्फ़ इन्कार किया बल्कि शल्मग़ानी पर लअ्नत भी की और लोगों को उससे दूर रहने की हिदायत भी की क्योंकि इसी दौरान शल्मग़ानी ने ग़ुलू और हुलूल की बातें भी शुरूअ कर दी थीं। लेकिन क़बीले वालों ने यक़ीन नहीं किया। हुसैन इब्ने रौह रह्मतुल्लाह अलैह ने शीआ हज़रात को ख़त लिखा और उन्हें शल्मग़ानी के शर से आगाह किया, उस पर लअ्नत की और लोगों को दूर रहने की ताकीद की। फिर हज़रत इमामे ज़माना अलैहिस्सलाम की तौक़ीअ भी

बक़िया सफ़हा न.० २६ पर.....

नुसरते ग़ैबी

इस्लामी मुआशरा, ऐसा मुआशरा है जिसकी तदवीन और तब्लीग़ हज़रत आदम अलैहिस्सलाम से ही चली आ रही है। तमाम एलाही नुमाइन्दे इसी बात के कोशाँ रहे कि बन्दगाने ख़ुदा "सिराते मुस्तक़ीम" पर गामज़न रह सकें। इसी एलाही हदफ़ की तकमील के लिए ख़ातेमुल मुरसलीन हज़रत मोहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही व सल्लम जैसी मावराए तसव्वुर नूरानी ज़ात ने पैकरे ख़ाकी में इस दुनिया में क़दम रखा। ख़ुदावन्द मुतआल ने तअ्लीमात का एक मुकम्मल ख़ज़ाना क़ुरआन मजीद की शक्ल में उन पर नाज़िल किया और ग़ैब पर ईमान को एक अहम तअ्लीम क़रार देते हुए फ़रमाया:

"येह वोह किताब है जिसमें किसी तरह के शक की गुन्जाइश नहीं है। येह साहेबाने तक़्वा और परहेज़गारों के लिए हिदायत है, जो ग़ैब पर ईमान रखते हैं।"

(सूरह बक़रा (२), आयत २-३)

इस आयत में "मुत्तक़ीन" से लफ़्ज़े "ग़ैब" को मुन्सलिक करके एक उसूल बयान किया जा रहा है कि बग़ैर तक़्वा न ग़ैबत समझ में आएगी और न ही ग़ैबत के बग़ैर तक़्वा।

दूसरा येह कि आख़ेरत पर यक़ीन रखो। आख़ेरत ज़िन्दगी में मौत से पहले दिखाई नहीं देती। इसका लाज़िमा अच्छे अअ्माल की तरफ़ इन्सान की रविशे हयात को ढालना है। अगर इस रविश पर चले तो हमारी आख़ेरत सहीह है। जहाँ येह रविश बताई गई है वहीं एक टहूका भी साथ में दे दिया है कि इन्सान इस रविश की मुख़ालेफ़त में ख़ुदा को धोका देगा। मगर ख़ुदा को कोई धोका नहीं दे सकता है। वोह असलन अपने आप ही को धोका देता है।

अब हम अमले सालेह की तरफ़ अपने ज़ेह्नों को इस तरह मुतवज्जेह कराएँ कि हम जगह जगह पर आयाते एलाही, जो हमारे लिए नुसरत का पैग़ाम लेकर आई हैं उन्हें याद कर लें। इसके कई मदारिज हैं, एक इन्सान के ज़रीए, इल्म के ज़रीए, रह्बर के ज़रीए, मलाएका के ज़रीए, अम्बिया-ओ-मुरसलीन अलैहिमुस्सलाम के ज़रीए और औसिया अलैहिमुस्सलाम के ज़रीए। फिर हमारे यहाँ वसीये रसूल सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही व सल्लम का जो येह तनाज़आ मुतनाज़ेअ् है कि वोह ग़ाएब हैं तो ज़ाहिर क्यों नहीं होता? क़ुरआन आईना दिखा रहा है। हम ने ग़ैबत की एक छोटी सी झलक दी है वरना हर इन्सान के साथ ख़ुदा की नुसरते ग़ैबी रहती हैं मगर कहीं मअ्मूली कहीं क़द्रे ज़्यादा।

इसी बेना पर इस एअ्तेक़ाद का एक हिस्सा ख़ुदावन्द आलम की "ग़ैबी इम्दाद" से मुतअल्लिक़ है। इस एलाही इम्दाद में इब्तेदाए तारीख़ से ही बेह्तरीन सूरत में इन्सानों को आमादा किया है और ज़वाल-ओ-नाबूदी से बचाए रखा है।

आयाते क़ुरआनी से इस्तेफ़ादा करने पर येह बात रोशन हो जाती है कि ख़ुदावन्द मुतआल ने हमेशा बातिल के मुक़ाबिल, हक़ की तरफ़ अपनी नज़रे रह्मत फ़रमाई और उसका देफ़ाअ् किया है। येह देफ़ाअ् अक्सर छिपी हुई क़ूवत और इम्दादे ग़ैबी की सूरत में रहा। और येह बात बहुत वाज़ेह है कि ख़ुदावन्द मुतआल की येह सुन्नत, हक़-ओ-बातिल के दरमियान

सबसे बड़े फ़ैसला कुन मुक़ाबले और इस काएनात में अम्बिया अलैहिमुस्सलाम के अह्दाफ़ की तकमील यअ्नी क़यामे हज़रत महदी अलैहिस्सलाम के वक़्त बेश्तर अज़ क़ब्ल जल्वागर होगी।

हालाँकि क़यामे हज़रत महदी अलैहिस्सलाम की बुनियाद तबीई उमूर पर होगी, लेकिन इस आलमी क़याम की अज़मत-ओ-वुस्अत के तक़ाज़े के तौर पर ख़ुदावन्द मुतआल कुछ छिपी हुई और माफ़ौक़ुल फ़ितरत क़ूवतों को हज़रत महदी अलैहिस्सलाम के हवाले कर देगा, ताकि आप फ़त्ह से हमकिनार हों।

ग़ैबी इम्दाद की मिसालें

१) एलाही मदद

नुसरते एलाही, ख़ुदावन्द मुतआल की जानिब से मोअ्मिनीन के लिए हक़ को जारी करने की बेह्तरीन मिसाल है। क़ुरआन करीम में इस तअल्लुक़ से बयान हुआ है:

"और यक़ीनन जो लोग ख़ुदा (के दीन) की मदद करते हैं वोह उनकी मदद करेगा। और यक़ीनन वोह साहेबे क़ूवत भी है और साहेबे इज़्ज़त भी।"

(सूरह हज (२२), आयत ४०)

येह नुसरत न सिर्फ़ अम्बिया अलैहिमुस्सलाम के शामिले हाल थी बल्कि रवायाते फ़रावाँ में इसे हज़रत महदी अलैहिस्सलाम की फ़त्ह के लिए अहम सबब के उन्वान से याद किया गया है।

पैग़म्बर अकरम सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही व सल्लम इस ज़िम्न में फ़रमाते हैं:

"हमारे अह्लेबैत के क़ाएम की ताईद, नुसरते एलाही के ज़रीए की जाएगी।"

(कमालुद्दीन, जि.१, स.२५७, ह.२)

२) मलाएका

ख़ुदावन्द आलम की जानिब से मोअ्मिनीन की इम्दाद के लिए जो दूसरी मदद की गई है वोह मलाएकए ख़ुदा है। ख़ुदावन्द आलम ने क़ुरआन करीम में चन्द मवाक़ेअ् पर मलाएका की इम्दाद को इस तरह बयान किया है:

(अ) हज़रत लूत अलैहिस्सलाम की मदद करने वाले मलाएका

"आप ने कहा ऐ फ़रिश्तों तुम्हें क्या मुहिम दरपेश है? उन्होंने कहा हमें एक मुजरिम क़ौम की तरफ़ भेजा गया है ताकि उनके ऊपर सख़्त मिट्टी के पत्थर बरसाएँ जिन पर परवरदिगार की तरफ़ से हद से गुज़र जाने वालों के लिए निशानी लगी हुई है। और हम ने साहेबाने ईमान को वहाँ से बाहर निकाला (ताकि वोह इस अज़ाब में गिरफ़्तार न हों)।"

(सूरह ज़ारियात (५१), आयत ३१-३५)

(ब) जंगे बद्र के मलाएका

"जब तुम परवरदिगार से फ़रियाद कर रहे थे तो उसने तुम्हारी फ़रियाद सुन ली (और फ़रमाया) कि तुम्हारी मदद के लिए यके बअ्द दीगर एक हज़ार फ़रिश्ते भेज रहा हूँ।"

(सूरह अन्फ़ाल (८), आयत ९)

(ज) जंगे अह्ज़ाब के मलाएका

"ईमान वालो! उस वक़्त अल्लाह की नेअ्मत को याद करो जब कुफ़्र के लश्कर तुम्हारे सामने आ गए और हम ने उनके ख़िलाफ़ तुम्हारी मदद के लिए तेज़ हवा और ऐसे लश्कर भेज दिए जिनको तुम ने देखा भी नहीं था और अल्लाह तुम्हारे अअ्माल को ख़ूब देखने वाला है।"

(सूरह अह्ज़ाब (३३), आयत ९)

एक रवायत में एलाही इम्दाद को क़यामे हज़रत महदी अलैहिस्सलाम में ग़ैबी इम्दाद से मर्बूत करते हुए रसूले इस्लाम सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही व सल्लम इस तरह बयान फ़रमाते हैं:

"....और मलाएका के ज़रीए ख़ुदावन्द आलम मदद करेगा...."

(कमालुद्दीन, जि.१, स.२५८, ह.२)

रवायत से इस्तेफ़ादा करने पर येह वज़ाहत होती है कि जो मलाएका हज़रत महदी अलैहिस्सलाम की इम्दाद करेंगे उनके तीन गिरोह हैं:

(अ) मलाएकए मुक़र्रब

ख़ुदा की तरफ़ से वही लाने वाले और मलाएकए मुक़र्रेबीन के ज़हूर के वक़्त नाज़िल होने के मुतअल्लिक़ हमारे पास कसीर तअ्दाद में रवायतें मौजूद हैं जिससे क़यामे हज़रत महदी अलैहिस्सलाम की अज़मत-ओ-बुज़ुर्गी का अन्दाज़ा होता है।

अबू हम्ज़ा सुमाली फ़रमाते हैं कि इमाम बाक़िर अलैहिस्सलाम को फ़रमाते हुए सुना:

"जब भी क़ाएमे आले मोहम्मद ज़हूर करेंगे, यक़ीनन ख़ुदावन्द आलम मलाएकए मुसव्वेमीन, मुर्देफ़ीन-ओ-मुन्ज़ेलीन-ओ-कर्रूबीन के ज़रीए उनकी इम्दाद करेगा। जिब्रईल उनके सामने मीकाईल दाहिनी जानिब और इस्राफ़ील उनके बाएँ जानिब मौजूद होंगे।"

(अल-ग़ैबा, स.२३४, ह.२२)

(ब) जंगे बद्र में मौजूद मलाएका

कुछ रवायात जंगे बद्र में मौजूद मलाएका के ज़रीए हज़रत महदी अलैहिस्सलाम की इम्दाद के बारे में वारिद हुई हैं।

इमाम बाक़िर अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं:

"ऐ साबित! गोया कि मैं इस तरह देख रहा हूँ कि हमारे ख़ानदान के क़ाएम तुम्हारे नजफ़ के क़रीब हैं और अपने हाथों से कूफ़ा की तरफ़ इशारा कर रहे हैं। और जैसे ही नजफ़ से क़रीब होंगे, परचमे रसूले ख़ुदा को बलन्द करना चाहेंगे और जैसे ही उसे बलन्द करेंगे बद्र के मलाएका उसके नीचे आ जाएँगे।"

(अल-ग़ैबा, स.३०७, ह.२)

इमाम सादिक़ अलैहिस्सलाम नीज़ फ़रमाते हैं:

"जिस वक़्त क़ाएम क़याम करेंगे रोज़े बद्र वाले मलाएका (वोह कि जो जंगे बद्र में रसूले ख़ुदा की मदद कर रहे थे) आप के साथ आ जाएँगे और उनकी तअ्दाद पाँच हज़ार होगी।"

(अल-ग़ैबा, स.२४४, ह.४४)

(ज) क़यामे इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम की इम्दाद के लिए आए हुए मलाएका

रवायात से येह बात साबित है कि मलाएका रोज़े आशूरा इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम की इम्दाद के लिए नाज़िल हुए। अलबत्ता तक़दीरे एलाही के तहत उस वक़्त करबला पहुँचे जब कारज़ारे करबला ख़त्म हो चुका था। इस बेना पर ख़ुदावन्द आलम ने उनको इस बात पर मामूर किया कि जब तक क़यामे मुन्तक़िमे हुसैन अलैहिस्सलाम बर्पा नहीं होता, ज़मीन पर रहें और जब वोह मुन्तक़िम ज़हूर फ़रमाएँ उनकी मदद करें और ख़ूने सैयदुश्शोहदा का इन्तेक़ाम लें। उनका शेआर ***"या लसारातिल हुसैन"*** है।

(उयूने अख़बार अल-रेज़ा अलैहिस्सलाम, जि.१, स.३९९, ह.५८)

३) दुश्मनों के दिलों में ख़ौफ़ पैदा करना

ख़ालिक़े काएनात, इमाम महदी अलैहिस्सलाम के आलमी क़याम के वक़्त, काफ़िरों, मुशरिकों और ज़ालिमों के क़ल्ब में ख़ौफ़-ओ-हेरास डाल देगा जिससे वोह मुक़ाबले और मुख़ालेफ़त की क़ूवत खो बैठेंगे। अलबत्ता येह ख़ौफ़ का डालना, अम्बिया अलैहिमुस्सलाम के ज़माने में भी राएज था। क़ुरआन करीम ने बहुत सी आयात में इस तरफ़ इशारा किया है :

"हम अन्क़रीब काफ़िरों के दिलों में तुम्हारा रोअ़्ब डाल देंगे...."

(सूरह आले इमरान (३), आयत १५१)

इस अक़ीदे की बुनियाद पर कोई रुकावट नहीं बचेगी। जब कि एक अज़ीम ग़ैबी इम्दाद ख़ुदावन्द आलम की जानिब से हज़रत महदी अलैहिस्सलाम के लिए ख़ौफ़-ओ-हेरास होगी जो ख़ुदावन्द दुश्मनों के दिलों में डाल देगा जैसा कि कसीर रवायात में बयान किया गया है।

इमाम मोहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम इस बारे में फ़रमाते हैं :

"हमारा क़ाएम मन्सूर ब रोअ़्ब (जिसकी मदद दुश्मनों के दिलों में ख़ौफ़ डाल कर की जाएगी) है।"

(कमालुद्दीन, जि.१, स.३३०, ह.१६)

४) क़ुदरती ताक़तें

अ़स्रे ज़हूर में ग़ैबी इम्दाद का एक हिस्सा वही फ़ातेह क़ूवत-ओ-क़ुदरती वसाएल हैं जिनसे ख़ुदावन्द आलम ने अपने पैग़म्बरों को लैस किया था। जैसा की हवा, तूफ़ान, बादल, वग़ैरह।

क़ुरआन करीम ने इन में से कुछ अवामिल को हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम के लिए मुसख़्ख़र किया था। इस बारे में इस तरह फ़रमाता है :

(सूरह अम्बिया (२१), आयत ८१)

"और सुलेमान के लिए तेज़ हवाओं को मुसख़्ख़र कर दिया जो उनके हुक्म से उस सरज़मीन की तरफ़ चलती थीं, जिनमें हम ने बरकतें रखी थीं और हम हर शै के जानने वाले हैं।"

इसी तरह रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही व सल्लम की जंगे अह्ज़ाब में हवा और तूफ़ान के वसीले से मदद की गई जिसके बारे में क़ुरआन करीम फ़रमाता है :

"ऐ ईमान वालों! उस वक़्त अल्लाह की नेअ़्मत को याद करो जब कुफ़्र के लश्कर तुम्हारे सामने आ गए और हम ने उनके ख़िलाफ़ तुम्हारी मदद के लिए तेज़ हवा और ऐसे लश्कर भेज दिए जिनको तुम ने देखा भी नहीं था और अल्लाह तुम्हारे अअ़्माल को ख़ूब देखने वाला है।"

(सूरह अह्ज़ाब (३३), आयत ९)

फ़रावान रवायात में क़ुदरती अवामिल के ज़रीए आख़री हुज्जते एलाही की ग़ैबी इम्दाद को बयान किया गया है।

रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही व सल्लम हदीसे मेअ़्राज में ख़ुदावन्द आलम से नक़्ल करते हैं :

"और हवा को उनके लिए मुसख़्ख़र करूँगा और सख़्त तरीन बाग़ियों को उनके सामने राम करूँगा....।"

(कमालुद्दीन, जि.१, स.२५४, बाब २३, ह.४)

इस वक़्त हम क़ारेईन केराम की तवज्जोह इस अहम नुक़्ते की तरफ़ मब्ज़ूल कराना चाहते हैं कि जो बयान किए गए मफ़हूम की कलीद है और वोह येह कि अगर हम अपने अतराफ़ के माहौल पर नज़र डालें तो रोज़ाना

की ज़िन्दगी में ऐसे मुतअद्दिद वाक़ेआत रूनुमा होते हैं जिनके सबब बेसाख़्ता हमारी ज़बान पर येह कलमा जारी होता है कि "ख़ुदावन्द आलम ने मदद की वरना येह हादसा रूनुमा हो जाता।" लेकिन इसी रविश को जब दीन में दाख़िल करते हैं तो हम फ़ैसला नहीं कर पाते कि इन्सान को बचाने के लिए कोई रहबर का होना ज़रूरी है कि जो हमें येह बताता रहे कि जब अम्बिया अलैहिमुस्सलाम की मदद उस तरीक़े से मलाएका ने की, जिस तरह हम ने ऊपर बयान किया है, बिल्कुल उसी तरीक़े से सालेहीन की इम्दाद ग़ैबी तौर पर कैसे होती है। आज एक शोर उठा हुआ है कि इमाम ग़ाएब हैं तो ज़ाहिर क्यों नहीं होते? क़ुरआन कहता है तक़्वा और ग़ैबत येह दोनों एक दूसरे से जुड़े हुए हैं, लाज़िम और मल्ज़ूम हैं, एक ही सिक्के के दो रुख़ हैं। तुम तक़्वा एख़्तेयार करो, पता चल जाएगा कि ग़ैब से नुसरत किस तरह होती है और ग़ाएब क्यों हैं?

ऐ मेरे मौला! उन लोगों की अक़्ल-ओ-शऊर को रोशनी दे दीजिए जो बातिल की तरफ़ झुके हुए हैं, और आप की ग़ैबत पर मोअ़तरिज़ हैं। हम लब्बैक कह रहे हैं, मेरे मौला, आप इस तरीक़े से ग़ैब के बादलों के पीछे हैं कि जैसे किसी सहाब के पीछे ख़ुर्शीदे इमामत चमक रहा हो, जो अपनी बरकतों से किसी को महरूम नहीं करता, आप हमें महरूम न कीजिएगा। आप हमारे लिए वोह तमाम अस्बाब मुहय्या कर दीजिए जो तक़्वा के लिए अहम हैं ताकि ग़ैब पर हमारा पूरा पूरा ईमान बाक़ी रह जाए।

दौरे ग़ैबते सुग़रा से लेकर आज तक निज़ामे काएनात का ज़ाहिरी और मख़्फ़ी तरीक़े से अन्जाम पज़ीर होना इस बात पर दलालत करता है कि कोई ग़ैब में रहकर नुसरते ग़ैबी हासिल कर रहा है और बह्रे ज़ुल्मात में आफ़ताबे काएनात को ग़र्क़ होने से महफ़ूज़ किए हुए है।

सफ़हा न॰ २१ का बाक़ी .....

सादिर हुई जिसमें हज़रत ने साफ़ अल्फ़ाज़ में शल्मग़ानी पर लअ़नत की और उससे, उसकी पैरवी करने वालों, उसके बयानात से राज़ी रहने वालों और इस तौक़ीअ़ के बअ़द भी उससे दोस्ती और तअल्लुक़ात रखने वालों पर भी लअ़नत की और उन तमाम अफ़राद को भी दूरी एख़्तेयार करने का हुक्म दिया।

उलमाए केराम ने उसे सूफ़ी भी कहा है। सन ३२२-३२३ हि. में ख़लीफ़ा बनी अब्बास "अर्राज़ी बिल्लाह" के हाथों क़त्ल किया गया और शीओं को उसके शर से नजात मिली।

(महदी मौऊद, स.७०४-७१४)

क़ारेईन! इन झूठे दअ़्वेदारों के अलावा कुछ और नाम भी हैं हम मज़्मून की तवालत को मद्दे नज़र रखते हुए दो के नाम नक़्ल कर रहे हैं। अबू बक्र बग़दादी जिसे अबू दलफ़ मज्नून भी कहा जाता है। जो ग़ुलू और मख़्मसन का क़ाएल था। और मोहम्मद इब्ने अली बिलाल बिलाली.....।

आख़िर में एक मर्तबा फिर ज़रूरी है इस बात को दोहरा दिया जाए कि येह सारे झूठे दअ़्वेदारान न सिर्फ़ हज़रत वलीये अम्र अलैहिस्सलाम के वजूद की दलील हैं बल्कि उसके दअ़्वे मन्सबे नेयाबत की अहम्मीयत को भी वाज़ेह कर रहे हैं।

ख़ुदावन्द आलम से दुआ है हज़रत इमामे ज़माना अलैहिस्सलाम की ग़ैबत को ख़त्म फ़रमाए, हम सब को हज़रत हुज्जत अलैहिस्सलाम की ग़ुलामी का शरफ़ एनायत फ़रमाए, ज़मानए ग़ैबत में हज़रत हुज्जत इब्निल हसन अल अस्करी अलैहेमस्सलाम के दुश्मनों से उन हज़रत की देफ़ाअ़ की तौफ़ीक़ एनायत करे। आमीन।

AL QAEM AL MUNTAZAR, JAN 2022 TO JUN 2022, VOL. XXIV, ISSUE NO. 1, RNI NO. 70132/98

हज़रत हुज्जत इब्निल हसन अलैहेमस्सलाम फ़रमाते हैं:

अगर हमारे शीआ़
(ख़ुदा उनको अपनी एताअ़त की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए)
एक दिल होकर अपने अ़ह्द-ओ-पैमान की वफ़ा करते तो हमारी बाबरकत मुलाक़ात में ताख़ीर न होती और हमारे दीदार की सआ़दत उन्हें जल्द नसीब होती।

(एह्तेजाजे तबरसी, जि.२, स.४९९)

www.almuntazar.in

ख़त-ओ-किताबत का पता:

एसोसीएशन ऑफ़ इमाम महदी (अ़.स.), पोस्ट बॉक्स न. १९८२२, मुम्बई-४०००५०

Printed, Published and Edited by Syed Mohammed Akbar Rizvi on behalf of Association of Imam Mahdi (A.S.), Published from 97/C, Bazar Road, Bandra (W), Mumbai 400050, and Printed at Gazelle Enterprise Offset Printing & Packaging, 504/A-Sussex Industrial Estate, D.K. Cross Road, Byculla, Mumbai 400 027 (M.S.)